

जून 2024

दादावाणी

Retail Price ₹ 20



पहले आप कर्ता थे इसलिए भूतकाल की, वर्तमान की उपाधि (पेशानी) रहती थी और भविष्य काल की अग्रशोच रहती थी। अब, आप कर्ता नहीं हो इसलिए भूतकाल गॉन, भविष्य काल व्यवस्थित के ताबे में है, इसलिए वर्तमान में रहो। जिस तरह ये दादा वर्तमान में रहते हैं न, उस तरह। इसलिए फ्रेश दिखाई देते हैं दादा !

UK



जर्मनी



वर्ष : 19 अंक : 8

अखंड क्रमांक : 224

जून 2024

पृष्ठ - 36

दादावाणी

भूत-भविष्य भूलकर, बरतो वर्तमान में

Editor : Dimple Mehta

© 2024

Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

**Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at

Amba Multiprint

Opp. H B Kapadiya New High
School, At-Chhatral, Tal: Kalol,
Dist. Gandhinagar - 382729

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : 9328661166-77

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

5 साल

भारत : 1000 रुपये

वार्षिक

भारत : 200 रुपये

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

संपादकीय

आज के आधुनिक युग में भागदौड़ भरी जिंदगी में मनुष्यों के पास तमाम सुख-सुविधा के साधन होने के बावजूद उनके पास शांति नहीं है, खुद की इच्छा नहीं होने के बावजूद भी लगातार चिंता-टेन्शन में ही रहते हैं, भूतकाल के दुःखों को भूल नहीं पाते और भविष्य काल के विचारों की कल्पना के जालों में लिपटे रहते हैं, जैसे कि ऐसा हो जाएगा तो क्या होगा? इन्कमटेक्स वाले पैन्ल्टी लगाएंगे तो? एक्सिडेंट हो जाएगा तो? बेटियों का क्या होगा? बीमारी के समय बच्चे ध्यान नहीं रखेंगे तो? मैं मर जाऊंगा तो? ऐसे अनेक विचारों के बवंडर में उलझ जाते हैं, वही अग्रशोच है। जो खुद को दुःख में रखें, नुकसान करे, वह आर्तध्यान कहलाता है और दूसरों को दुःखी करे, नुकसान करे, वह रौद्रध्यान कहलाता है।

ऐसा चिंता-टेन्शन वाला मनुष्यपना किस काम का? यदि मनुष्य के चिंता-टेन्शन बंद नहीं होंगे तो वे आत्मसुख का अनुभव कैसे कर पाएंगे? हर एक व्यक्ति के तमाम दुःख कैसे दूर हो, यही परम पूज्य दादाश्री की भावना थी। वे हमेशा कहते थे कि मैं क्रमिक में से आया हूँ, पर उस क्रमिक मार्ग में किए गए पुरुषार्थ के फलस्वरूप यह अक्रम ज्ञान हमारे उदय में आया है। अक्रम में ज्ञान प्राप्त होते ही अहंकार और ममता दोनों के जाते ही ‘मैं कौन हूँ’ और ‘कर्ता कौन है’ इनका भान होते ही चिंता रहित जीवन जी पाते हैं, फिर भी जब डिस्चार्ज कर्म का उदय आता है तब महात्मा भूतकाल और भविष्य काल के विचारों में एकाकार हो जाते हैं।

पूरा जगत् वर्तमान की निर्बलता को छुपाने के लिए भूतकाल को याद करता है और भविष्य में यदि ऐसा हो जाएगा तो, वैसा हो जाएगा तो, ऐसी चिंताओं में रहता है। इसलिए परम पूज्य दादाश्री हमेशा सचेत करते थे कि ‘यदि’ और ‘तो’ शब्दों का उपयोग कभी मत करना। इन दो शब्दों को मैंने कितने सालों से अपनी डिक्शनरी में से निकाल दिया है। जहाँ अपनी सत्ता ही नहीं है, वहाँ भविष्य के विचार करना, वह हेल्पिंग नहीं है। थिंक फोर टुडे, नोट फोर टुमोरो! अतः सेफसाइड के लिए नॉमेलिटी में रहकर वर्तमान में जीना है। वर्तमान में हमारे पास अपार सुख होता है, परंतु भूतकाल या भविष्य काल के विचार करने से वह सुख चला जाता है।

अक्रम ज्ञान वर्तमानकाली (वर्तमान में रह सके ऐसा) ज्ञान है। ‘व्यवस्थित कर्ता है’, ऐसा समझ में आते ही भूतकाल का भय चला जाता है और भविष्य काल ‘व्यवस्थित’ के ताबे में है, अतः वर्तमान में रहा जा सके, ऐसा है। इसीलिए मोक्षमार्ग कहा है न! परम पूज्य दादाश्री ‘व्यवस्थित’ के ज्ञान से निरंतर वर्तमान में रहते थे, इसलिए वे हमेशा फ्रेश दिखाई देते थे, सदा टेन्शन रहित उनके मुख पर निरंतर मुक्त हास्य ही रहता था! और वे हमें भी आर्तध्यान-रौद्रध्यान, चिंता से मुक्त रखना सिखाते हैं। उनके द्वारा दिए गए ज्ञान से महात्मा वर्तमान में रहकर, हमेशा मुक्त दशा का अनुभव करें, ऐसी हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

भूत-भविष्य भूलकर, बरतो वर्तमान में

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

अग्रशोच, वह आर्तध्यान

प्रश्नकर्ता : आर्तध्यान और रौद्रध्यान प्रतिक्षण होते ही रहते हैं, तो आर्तध्यान किसे कहेंगे और रौद्रध्यान किसे कहेंगे, इसका ज़रा स्पष्टीकरण कर दीजिए न।

दादाश्री : खुद अपने लिए ही, किसी को भी बीच में नहीं लाए, किसी को भी दुःख न हो, इस तरह सँभलकर खुद अपने आप ही दुःख झेलता रहे, वह आर्तध्यान है और जो किसी को दुःखी कर दे, वह रौद्रध्यान। रौद्रध्यान तो, आप दूसरों के लिए कल्पना करें कि इसने मेरा नुकसान किया, वह सब रौद्रध्यान कहलाता है।

दूसरों का कुछ भी नुकसान हो ऐसा विचार आया तो वह रौद्रध्यान हुआ कहलाएगा। मन में विचार आया कि कपड़ा खींचकर देना। तो, ‘खींचकर देना’ कहा तभी से ग्राहकों के हाथ में कपड़ा कम जाएगा ऐसी कल्पना करके और उसके ज़्यादा पैसे मिलेंगे, ऐसी कल्पना की, वह रौद्रध्यान कहलाता है। दूसरों का नुकसान करे ऐसा ध्यान, वह रौद्रध्यान कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : रौद्रध्यान में, हम से दूसरों को दुःख होता है, यानी रौद्रध्यान हुआ न?

दादाश्री : हाँ। वह दुःख हो या न हो लेकिन हम उन्हें कहें कि ये सभी नालायक हैं, लुच्चे हैं, चोर हैं, वह सब रौद्रध्यान ही कहलाता है।

वास्तव में जगत् में कोई दोषित है ही नहीं।

जो दोषित लगता है, वह अपनी गलत समझ से लगता है।

आर्तध्यान तो, जब खुद को ज्ञान नहीं होता और ‘मैं चंदूभाई हूँ’ ऐसा हो जाता है और फिर मुझे ऐसा हो जाए या ऐसा हुआ तो क्या होगा? बेटियों की शादी क्या तू करवाने वाला था? जब 24 साल की हो जाए तब शादी करवाना या जब 30 साल की हो जाए तब। लेकिन यह तो पाँच साल की हो तभी से ही चिंता करने लगता है, उसे आर्तध्यान करना कहते हैं।

खुद के लिए उल्टा सोचना, उल्टा करना, खुद की गाड़ी चलेगी या नहीं चलेगी, बीमार हुए और मर जाएँगे तो क्या होगा, यह सब आर्तध्यान कहलाता है। वह भी जब ज्ञान न हो, तब आर्तध्यान कहलाता है। कल क्या होगा? फलानी चिट्ठी आई है, इन्कम टैक्स वाला क्या करेगा? भविष्य के विचार करने पर यदि भय लगे तो समझना कि आर्तध्यान हुआ है।

प्रश्नकर्ता : अग्रशोच, भविष्य की चिंता?

दादाश्री : अग्रशोच, वह सब आर्तध्यान कहलाता है। आर्तध्यान में खुद अपनी चिंता करता रहता है कि ऐसा होगा तो क्या होगा? ऐसा होगा तो क्या होगा? ऐसी घबराहट होती रहती है।

कल्पना के जालें क्यों बुनने हैं?

किसी पक्षाघात हुए व्यक्ति को देखता है, तो उसे भी विचार आते हैं कि, ‘अरे, मुझे

पक्षाघात हो जाएगा तो क्या होगा?’ अब, अक्ल वाले को सोचने की ज़रूरत है क्या? अक्ल वाला ही सोचता है न ऐसा! ऐसी अक्ल तो किस काम की? जो अक्ल दुःख लाए, उस अक्ल को अक्ल कहा ही कैसे जाएगा? जो आए हुए दुःख को भी विदा कर दे, उसे अक्ल कहते हैं। यह तो, दुःख और दुःख ही। मुझे अगर पक्षाघात हो जाएगा तो मेरा क्या होगा? मेरा कौन? यह बेटा तो बोलता नहीं है, इकलौता है यह! ऐसे कल्पनाएँ करते रहता है। अरे, हुआ नहीं है तो फिर क्यों...? इसे कहते हैं अग्रशोच। अग्रशोच यानी क्या? जो नहीं हुआ है उसकी भी कल्पना करना। आपको अभी अग्रशोच है किसी तरह की? चैन से मजे करते हो न! अग्रशोच तो सभी अक्लमंद लोगों को होती ही है न! या पागलों को होती है?

प्रश्नकर्ता : कहे जाने वाले अक्लमंद को ही होती है।

दादाश्री : पागल को नहीं होती, नहीं? खिड़कियाँ ही बंद! उसे दिखाई देगा तब झंझट होगी न!

अरे, साधु महाराज के मन में भी ऐसा होता है कि, ‘इन महाराज को पक्षाघात हो गया है और फिर मेरे नाम की भी राशि यही है, तो मुझे भी पक्षाघात हो जाएगा’, ऐसी अक्ल का उपयोग करते हैं। अक्ल का उपयोग करते हैं वैसे-वैसे अंदर अच्छा मजा आता है, नहीं? और यदि अक्ल का उपयोग नहीं किया होता तो कोई दिक्कत नहीं थी! इसलिए फिर नींद नहीं आती बेचारे को! उस पक्षाघात को बुलाया बेचारे ने, सो रहा था पक्षाघात किसी और के वहाँ, उसे यहाँ बुलाया!

अग्रशोच में क्या करते हैं? आगे क्या होगा, उसके बारे में सोचकर आज चिंता करते हैं। शरीर

छूटने की स्थिति में हो तब क्या-क्या अग्रशोच होती है? ‘इससे ऐसा हो जाएगा तो क्या होगा? इस तरह से ऐसा हो जाएगा तो क्या होगा?’ अरे, क्या होना है? जो होना है वही होना है। भविष्य में क्या होगा उसके लिए ही चिंतित रहते हैं। साधु-संन्यासी, आचार्य सभी। भविष्य में क्या होगा, उसके लिए ही पूरा पुरुषार्थ छूट जाता है, वहाँ पर उलझता रहता है। यहाँ खाने-पीने का नहीं खाता और वहाँ भविष्य में रहता है। अरे छोड़ न, अभी वहाँ क्या कर रहा है?

सारे कल्पना के जालें क्यों बुन रहे हो? इस दुनिया में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है कि जो खुद के भविष्य के बारे में समझ सके। व्यर्थ ही भविष्य की कल्पनाएँ करते रहते हैं कि ‘ऐसा हो जाएगा और ऐसा हो जाएगा तो?’ यदि और तो शब्दों का उपयोग ही मत करना। इन दो शब्दों को मैंने कितने ही सालों से अपनी डिक्शनरी (शब्दकोश) में से निकाल दिया है।

भविष्य की चिंता, बिगाड़े वर्तमान

प्रश्नकर्ता : मेरी तीन बेटियाँ हैं, उन तीन बेटियों की मुझे चिंता रहती है कि उनके भविष्य का क्या?

दादाश्री : आप भविष्य के बारे में विचार करें उससे अच्छा आज की सेफसाइड (सलामती) करना, प्रतिदिन सेफसाइड करना अच्छा। आगे के विचार जो करते हो न, वे विचार किसी भी तरह ‘हेल्पिंग’ (सहायक) नहीं हैं, बल्कि नुकसानदायक हैं। उसके बजाय आप प्रतिदिन सेफसाइड करते रहो यही सबसे बड़ा उपाय है। आपको समझ में नहीं आया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आया।

दादाश्री : आगे के विचार करने का अर्थ

नहीं है। वह सत्ता में ही नहीं है। एक क्षण में तो मनुष्य मर जाता है। उसके बारे में सोचने की ज़रूरत ही नहीं है। उन विचारों में तेरी मेहनत व्यर्थ जाती है। चिंताएँ होती हैं, परेशानियाँ होती हैं और वह हेल्पिंग ही नहीं है। वह वैज्ञानिक तरीका ही नहीं है।

जब हम बाहर जाते हैं, तब कितने फूट दूर का देखकर चलते हैं सौ फूट-दो सौ फूट या नज़दीक का देखते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, नज़दीक का देखते हैं।

दादाश्री : दूर का क्यों नहीं देखते? दूर का देखेंगे तो नज़दीक का रह जाएगा तो ठोकर लगेगी। यानी खुद की अपनी नॉमेलिटी में रहो। यानी रोज़ उसकी सेफसाइड देखते रहो। आपको उन्हें संस्कार अच्छे देने हैं, वह सब करना है। आप उनके लिए जोखिमदार हो, बाकी किसी और चीज़ के आप जोखिमदार नहीं हो। और ऐसी वरीज़ (चिंता) करने का तो अधिकार ही नहीं है मनुष्य को। मनुष्य को किसी भी प्रकार की वरीज़ करने का अधिकार ही नहीं है। उस अधिकार का चूपचाप से उपयोग कर लेते हैं। ये गुप्त रूप से भगवान को भी ठगते हैं। वरीज़ करनी ही नहीं चाहिए। वरीज़ किसलिए करनी है?

आप डॉक्टर, करते हो क्या ऐसी चीज़? किस की चिंता करते हो आप?

प्रश्नकर्ता : सभी की।

दादाश्री : क्यों, जो पेशन्ट मर जाते हैं उनकी या घर के लोगों की?

प्रश्नकर्ता : सभी की। घर की, बाहर की, पेशन्टों की। सारी वरीज़, वरीज़, वरीज़ ही हैं।

दादाश्री : वह तो सिर्फ एक प्रकार का

इगोइज़म कहलाता है। कृष्ण भगवान ने कहा है, 'जीव तुं शीदने शोचना करे। कृष्ण ने करवुं होय ए करे!' (जीव तू क्यों सोच रहा है। कृष्ण को जो करना है वे करेंगे) यहाँ से बाहर निकलते हो तो आप लॉग साइट (दूर का) देखकर चलते हो? क्यों आप नज़दीक की साइट तय करते हैं? कि यहाँ एक्सिडेंट न हो जाए, फिर आगे अपने आप चली ही जाएगी। यानी सेफसाइड हो गई कहा जाएगा। आपको इसमें समझ में नहीं आया? हेल्प (मदद) करेगी या फिर बात व्यर्थ जाएगी?

प्रश्नकर्ता : हेल्प करेगी।

दादाश्री : कितनी अधिक, यूज़लेस (व्यर्थ) बातें हैं! यह तो, बहुत दूर का देखोगे तो एक्सिडेंट कर दोगे, थोड़ी-थोड़ी देर में, पाँच-पाँच मिनट में एक्सिडेंट कर दोगे।

समझ में आया न, वैज्ञानिक तरीका यह है। वे सब तो गप्प मारने के तरीके हैं सारे। लड़कियों को किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं आएगी। उसके मैं थोड़े उपाय देता हूँ, दिक्कत न हो उसके लिए। बेटा-बेटी हैं, उनके तो आपको अभिभावक के तौर पर, ट्रस्टी बनकर रहना है। उनकी शादी की चिंता नहीं करनी है।

आजकल तो बेटे तीन साल की हो तभी से कहेगा कि, देखो न, मुझे इस बेटे की शादी करवानी है। अरे, बेटे की शादी बीस साल की उम्र में होगी, लेकिन अभी से क्यों चिंता करता है? कुछ लोग तो 'हमारी जाति में खर्चे बहुत हैं', कैसे करेंगे?' वे शिकायत करते रहते हैं। यह तो, सिर्फ इगोइज़म (अहंकार) करते रहते हैं। क्यों बेटे की चिंता करता रहता है? शादी के समय पर बेटे की शादी हो जाएगी, संडास संडास के टाइम पर होगी, भूख भूख के टाइम पर लगेगी, नींद नींद के टाइम पर आएगी। तू

क्यों किसी भी चीज़ की चिंता कर रहा है? नींद अपना टाइम लेकर आई है, संडास अपना टाइम लेकर आई है। किसलिए वरीज़ करते हो? नींद का टाइम होते ही अपने आप आँखें बंद हो जाएँगी। 'उठना' भी अपना टाइम लेकर आया है, उसी तरह बेटी भी अपने विवाह का टाइम लेकर आई है। वह पहले जाएगी या हम पहले जाएँगे, है कोई उसका ठिकाना?

भगवान ने कहा है, हिसाब मत लगाना। भविष्य काल का ज्ञान हो तो हिसाब लगाना। अरे, हिसाब ही लगाना है तो कल मर जाएगा उसका हिसाब लगा न! तो मरने की चिंता क्यों नहीं करता?' तब कहता है कि, 'नहीं, मरने का तो याद ही मत करवाओ।' तब मैंने कहा कि, 'मरने की बात करने में क्या आपत्ति है? क्या आप नहीं मरने वाले?' तब कहता है कि, 'लेकिन मरने का याद करवाओगे न, तो आज का सुख चला जाएगा, आज का सारा स्वाद बिगड़ जाएगा।' 'तब बेटी की शादी का किसलिए याद कर रहा है? उससे भी तेरा स्वाद चला जाएगा न? यह बेटी अपनी शादी का, सभी साधन लेकर ही आई है, माँ-बाप तो इसमें निमित्त ही हैं।' ज़्यादा या कम, जितना भी खर्चा होगा, वह एक्ज़ेक्टली सबकुछ लेकर ही आई है। यह तो सिर्फ इतना ही है कि सब बाप को सौंपा हुआ है।

बेटी भी अपना हिसाब लेकर आई होती है। बेटी की चिंता आपको नहीं करनी है। आप बेटी के पालक हो। बेटी अपने लिए लड़का भी लेकर आई होती है। आपको किसी से कहने नहीं जाना पड़ता कि लड़का पैदा करना। हमारी बेटी है, उसके लिए लड़का पैदा करना, ऐसा कहने जाना पड़ता है क्या? अर्थात् सारा सामान तैयार लेकर आई है। तब बाप कहता है, 'यह पच्चीस साल

की हो गई है, अभी तक उसका कोई ठिकाना नहीं पड़ रहा है, ऐसा है, वैसा है।' वह सारा दिन गाता रहता है। 'अरे, वहाँ पर लड़का सत्ताईस साल का हो चुका है, लेकिन तुझे मिल नहीं पा रहा है, तो शोर क्यों मचा रहा है? सो जा न, चुपचाप! वह लड़की अपना टाइमिंग (समय) सब आयोजन करके आई है।' एक्ज़ेक्टली (वास्तव में) देखने जाएँ तो यह जगत् बिल्कुल वरीज़ करने जैसा है ही नहीं, था भी नहीं और होगा भी नहीं।

चिंता, वह है सबसे बड़ा अहंकार

प्रश्नकर्ता : कोई व्यक्ति हर तरह से ईमानदार है, फिर भी उसे रात को नींद नहीं आती, भविष्य की चिंता रहा करती है, वह क्या है?

दादाश्री : चिंता अगर रहती हो तो वह बहुत ज़्यादा इगोइज़म है। उस इगोइज़म को थोड़ा कम करना चाहिए। चिंता यानी कि 'हम ही चलाते हैं', ऐसा हमारे मन में सिर्फ लगता है, इतना ही है! सभी धर्मों में क्या कहा जाता है? चिंता करने के लिए सब मना करते हैं। यानी अगर आपको चिंता होती हो तो आपका इगोइज़म बढ़ गया है, एक्स्ट्रा ओर्डिनरी (असामान्य) हो चुका है। नॉर्मलिटी (सामान्य सीमा) तक इगोइज़म रखा जा सकता है। उससे ज़्यादा इगोइज़म बढ़ जाने से चिंता होती है। यानी इगोइज़म ही कम करना है। संत पुरुषों के दर्शन करें, तो दर्शन करने से, नमस्कार करने से इगोइज़म कम होता है।

कभी आपको चिंता हुई है? अनुभव हुआ है? अब, जब चिंता होती है उस समय बहुत सुख होता है? तब भी लोग किसलिए चिंता करते हैं? उससे क्या फायदा?

प्रश्नकर्ता : मेरे खुद के लिए नहीं, दूसरों के लिए चिंता करनी पड़ती है।

दादाश्री : दूसरों के लिए चिंता? और दूसरे किसके लिए चिंता करते होंगे? आपके लिए! आप उनके लिए चिंता करते हो! कोई सफल नहीं हो पाता। चिंता यानी सब से बड़ा इगोइज़म! 'मैं दूसरों का कुछ कर सकूँ ऐसा हूँ', ऐसा जो होता है, वह चिंता है।

प्रश्नकर्ता : आपने एक जगह पर लिखा है कि 'चिंता, वह अहंकार की निशानी है'।

दादाश्री : हाँ, चिंता वह अहंकार की निशानी क्यों कहा जाता है? उसके मन में ऐसा लगता है कि 'मैं यह चला रहा हूँ', इसलिए उसे चिंता होती है। इसे चलाने वाला मैं हूँ, इसलिए इस बेटी का क्या होगा, इस बेटे का क्या होगा, ऐसा कहता है। इसका क्या होगा, उसका क्या होगा, यह मकान पूरा नहीं बनेगा तो क्या होगा, ऐसी चिंता खुद अपने ऊपर ले लेता है। खुद अपने आपको कर्ता मानता है। मैं ही मालिक हूँ और मैं ही कर रहा हूँ, ऐसा मानता है। खुद कर्ता है नहीं और व्यर्थ चिंता मोल लेता है। वास्तव में तो ये संयोग कर्ता हैं। सभी संयोग, साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स (वैज्ञानिक संयोगिक प्रमाण) मिलने पर कार्य होता है, ऐसा है। अपने हाथ में सत्ता नहीं है।

भविष्य का विचार किया, वह सब नुकसानदायक है। वर्तमान में रहना है, बस! भविष्य का विचार करता है तब भी तेरा चेहरा देखकर लोग समझ जाते हैं कि, भाई किसी विचार में डूबे हुए हैं। भूतकाल के बारे में सोचते हैं तब भी चेहरा बिगड़ जाता है।

सोचने की भी हद

देखो न, कहाँ तक का सोच लेते हैं! दुकान अगर बारह महिनें तक नहीं चली हो तो (सोचता

है कि) 'दुकान का दिवालिया निकल जाएगा। और फिर दिवालिया इस तरह निकल जाएगा, उसके बाद मेरी स्थिति ऐसी हो जाएगी।' यहाँ तक का सोच लेते हैं लोग! कहाँ तक का सोच लेते हैं? एक आदमी ने मुझ से कहा, 'सोचे बगैर चलेगा क्या? सोचे बगैर दुनिया कैसे चल सकती है?' तब मैंने कहा, 'तू इस ड्राइवर के पास वाली सीट पर बैठें, बोम्बे सिटी में और ड्राइवर से पूछें कि 'तू क्या-क्या सोच रहा है? अब ऐसे-ऐसे जाऊँगा, ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा क्या ऐसा सोचता है? क्या करता है वह?' ऐसा कुछ भी नहीं सोचता। अर्थात् हर एक व्यक्ति को कुछ हद तक का ही सोचना चाहिए, उसके बाद सोचना बंद कर देना चाहिए, स्टोप ही कर देना चाहिए, हर एक बाबत में। वह अगर आपकी मृत्यु की बात हो तो तुरंत ही आप स्टॉप कर देते हैं लेकिन इसमें व्यापार में नहीं करते। आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है, सोचने की भी कुछ हद होनी चाहिए।

दादाश्री : स्टोप करना आता है, नहीं आता ऐसा नहीं है। ये तो रमणता करते हैं। अक्ल लगाते हैं। 'बेटा अभी से झगड़ता है तो बूढ़ापे में मेरा कौन?' 'अरे भाई! ऐसा, यहाँ तक का सोच लिया!' आज के दिन का ही, कल का सोचने के लिए मना किया है भगवान ने। थिंक फोर टुडे, नोट फोर टुमोरो! (आज का सोचो, कल का नहीं!) और वह भी कुछ ही बाबतों में। गाड़ी में बैठ जाने के बाद 'टकरा जाएगी तो क्या होगा, टकरा जाएगी तो क्या होगा?' छोड़ो, ऐसा विचार बंद कर देना चाहिए। यह तो ऐसे विचार करता है कि अंत में दुकान का दिवालिया निकल जाएगा, उसके बाद क्या स्थिति होगी और उसके

बाद फिर क्या स्थिति होगी? शुक्रवार के बाज़ार में भीख माँगनी पड़ेगी। वह फिर पत्नी से कहता है 'भीख माँगनी पड़ेगी।' 'अरे, कहाँ से देखकर आया?' 'मैंने सोच लिया,' कहता है। अब यह अक्ल का बोरा! अब इसे क्या अक्लमंद कहेंगे? अक्ल तो उसे कहते हैं कि निरंतर सेफसाइड रखे। किसी भी जगह पर सेफसाइड तोड़े उसे अक्ल कहेंगे ही कैसे? और अक्ल तो पूरी तरह से सेफसाइड रखे, वहाँ तक का कर सकें, ऐसा है। मैं खुद जानता हूँ।

'हम बूढ़े हो जाएँगे, हम गिर जाएँगे, तब क्या होगा, भाई? यहाँ रास्ते पर चलते समय टकरा जाऊँगा तो क्या होगा?' 'अरे भाई, ऐसा क्यों सोच रहा है अभी? क्या होने वाला है?' 'अभी उसे हुआ ऐसा और क्या होना है? सोचना ही नहीं है। और टकराना वह तेरे हाथ में नहीं है। भगवान के हाथ में भी नहीं है। यदि भगवान के हाथ में होता तो उनसे सिफारिश करते लोग!' आप बताइए कि कौन से विचार करने चाहिए?

प्रश्नकर्ता : कुछ हद तक के ही विचार करने चाहिए।

दादाश्री : सोचकर बाद में फिर बंद। यह तो किसी भी चीज़ के पीछे इतने ज़्यादा पड़ जाते हैं, इतने ज़्यादा पड़ जाते हैं! और ऐसा सोचकर फिर बेटे को ऐसी दृष्टि से देखते हैं। बूढ़े नहीं हुए हैं फिर भी आज से ही शुरु कर देते हैं, कि 'बूढ़े हो जाएँगे तब क्या सेवा करेंगे?' यदि आप ऐसा सोचें और बेटा देखे और आपके मन में, आपकी आँखें (दृष्टि) उसके लिए टेढ़ी रहेगी। उसे लगेगा कि मेरे लिए खराब सोच रहे हैं। इसलिए फिर उसकी दृष्टि बदल जाती है। इसलिए ये सभी झगड़े उसी के ही हैं!

और भगवान क्या कहते हैं कि पूर्वग्रह के

सेवन से तेरा मरण है, प्रिज्यूडिस से तेरा मरण है। बेटा आज सामने बोला, तो क्या वह हमेशा ही सामने बोलेंगा? और क्या मल्टिप्लिकेशन (गुणाकार) करना चाहिए कि आज सामने बोला है तो अब आगे क्या होगा?

आज आपको किसी व्यक्ति ने मारा तो उसके बारे में विचार मत करो। फिर से कोई मारने वाला नहीं है। वह व्यक्ति आपको फिर से नहीं मारेगा। अरे, फिर से मारे तो एकाध बार, बाकी उसके हाथ में मारने की कोई सत्ता है ही नहीं। और आप ऐसा कहते हो कि यह सत्ता वाला है और यह सबकुछ कर सकता है!

अभी माँ-बाप को बच्चों पर इतनी ज़्यादा चीढ़ हैं कि बच्चे भी उनके लिए दृष्टि टेढ़ी रखते हैं कि 'मेरे बाप को मुझ पर चीढ़ है।' ऐसा किसलिए? कैसा लगता है? हर एक संयोग में कैसा व्यवहार करना वह आपको समझ में नहीं आए तो ज्ञानी से पूछ लेना चाहिए कि मुझे क्या करना चाहिए? वे सब बता देंगे।

गाड़ी में बैठा है उसे विचार आता है कि एक्सिडेंट हो जाएगा तो? इस विचार को तुरंत बंद कर देता है। ऐसे विचार आएँ कि तुरंत बंद कर देता है। क्यों बंद कर देता होगा? ऐसा फलदाई विचार आते हैं उस घड़ी क्यों बंद कर देता है? क्या साहब? गाड़ी में बैठते हैं तो इन्हें फलदाई विचार आते हैं कि एक्सिडेंट हो जाएगा तो क्या होगा? तो हमारी गाड़ी में ये भाई जाग्रत थे, वे नवकार मंत्र बोलते रहते थे। बोलते ही रहते थे नवकार मंत्र, ऐसा करना सावधानी कही जाएगी। वह गलत नहीं है, एक्सिडेंट हो जाएगा तो क्या होगा, ऐसा सोचना गलत है। सावधानी के तौर पर मंत्र बोलना वह तो अच्छा है, लेकिन क्या होगा ऐसा सोचना जोखमी है। विचारों की दखल से

ही यह संसार खड़ा रहा है। अर्थात् मनुष्य सिर्फ इतना समझ लें कि कितना सोचना है तो बहुत हो गया, बहुत सारे दुःख कम हो जाएँगे।

अग्रशोच बंद करने के लिए व्यवस्थित

प्रश्नकर्ता : 'क्या होगा', ऐसे जो विचार है, वही दुःख हैं, बाकी दुःख कहाँ है?

दादाश्री : दुःख नहीं है। इसीलिए तो हमने 'व्यवस्थित' कहा है। तभी आप इस दुःख में से मुक्त हुए न! व्यवस्थित के आधार पर तो आप सर्व दुःखों से, जो आने वाले थे उनसे मुक्त ही हो गए न! वह तो, भगवान ने कहा है कि क्रमिक मार्ग में अग्रशोच के अलावा अन्य कुछ भी नहीं होता। अग्रशोच यानी, 'अब क्या होगा, अब क्या होगा?' सन् 1991 में (भविष्य में) जो सोचना था उसके बारे में आज से ही सोचता है। महाराज भी कहते हैं कि, 'बुढ़ापा आए और यदि पैर टूट जाएगा तो क्या करूँगा?' अरे, लेकिन अभी हुआ नहीं है फिर क्यों दुःख मनाते हो? और आप (ज्ञान लिए हुए महात्मा) इन सब से मुक्त हो बैठे हो, इसीलिए शांति हो गई है न!

तभी तो अपने सारे महात्मा मजे से बैठते हैं, देखो न! इन्हें समझा दिया है कि, 'व्यवस्थित है' इसलिए फिर दखल भी नहीं है। आप 'व्यवस्थित' को समझ गए हैं और अनुभव हो गया है कि वास्तव में 'व्यवस्थित' ही है, फिर दुःख रहा कुछ भी?

व्यवस्थित शक्ति की वजह से आप सब को शांति है, इसी वजह से तो सब जगह शांति है। व्यवस्थित नहीं होता तब तो नींद ही नहीं आती न?

प्रश्नकर्ता : हमेशा टेन्शन ही टेन्शन रहता फिर तो।

दादाश्री : हाँ, टेन्शन, टेन्शन! यही मैं ढूँढ रहा था शुरु से। ऐसा कोई ज्ञान होना चाहिए कि जिससे सभी लोगों को शांति रहे। क्रमिक मार्ग में कभी भी नींद ही नहीं आती। टेन्शन ही टेन्शन!

आपके अहंकार और ममता दोनों चले गए हैं। और तभी चिंता रहित जीवन जी सकता है मनुष्य। वर्ना क्रमिक मार्ग के ज्ञानी भी चिंता रहित जीवन नहीं जी सकते। क्रमिक मार्ग अर्थात् अग्रशोच रहती ही है। भूतकाल गया लेकिन अग्रशोच रहती है। उसे फिर ज्ञान से दबाते रहते हैं। छिपाते रहते हैं। क्रमिक मार्ग के ज्ञानी भी क्या कहते हैं? अंदर आनंद है और बाहर उपाधि (दुःख) है, बाहर चिंता है, अग्रशोच रहती है। आपकी अग्रशोच बंद करने के लिए तो मैंने 'व्यवस्थित' कह दिया कि 'भाई, अब अग्रशोच क्यों करते हो?' आपको 'व्यवस्थित' कह दिया इसलिए सबकुछ इसी में आ गया। क्योंकि भविष्य काल व्यवस्थित के ताबे में है, क्योंकि सुबह उठने के एक मिनट बाद क्या होगा, वह व्यवस्थित के ताबे में है!

क्रमिक मार्ग में वे लोग लिखते हैं कि एक घंटे के लिए भी जगत् विस्मृत नहीं हो पाता। सबकुछ (याद) आता ही रहता है। भूतकाल और भविष्य काल, भूतकाल और भविष्य काल दोनों आते ही रहते हैं। अग्रशोच भी अंदर रहा करता है। जैसा कि तीर्थकरों ने लिखा है, जीव को अग्रशोच रहेगी ही भविष्य की। समकित होने के बावजूद भी अग्रशोच रहती है।

जीवित खत्म हो गया और रह गया मृत

मनुष्य चिंता रहित हो ही नहीं सकता और क्रमिक मार्ग में कोई भी व्यक्ति चिंता रहित हो ही नहीं सकता। ज्ञानी भी चिंता रहित नहीं होते।

उन्हें अंदर आनंद रहता है और बाहर चिंता रहती है। व्यवहार में, उन्हें इस बात की अग्रशोच रहती है कि भविष्य में क्या होगा और 'हमें' अग्रशोच नहीं रहती। हमने 'व्यवस्थित' पर छोड़ दिया है क्योंकि अग्रशोच कब तक है? सोचने वाला जीवित हो तभी तक और आपका सोचने वाला जीवित नहीं है न? कौन है सोचने वाला?

प्रश्नकर्ता : 'चंदूलाल।'

दादाश्री : हाँ, यानी अहंकार जीवित है। अहंकार दो प्रकार के हैं - एक, कर्म के कर्ता स्वरूप में और दूसरा, भोक्ता स्वरूप में।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह कर्ता स्वरूप का अहंकार तो गया।

दादाश्री : कर्ता रूपी अहंकार जीवित अहंकार है, जीवित और भोक्ता रूपी अहंकार मृत अहंकार है और मृत (अहंकार) अन्य कुछ नहीं कर सकता। और यदि जीवित का नाम ले लें तो क्या का क्या कर दे! यानी वह (जीवित) गया और यह (मृत) रह गया।

कर्तापद छूटते ही बरते वर्तमान में

प्रश्नकर्ता : अब, क्रमिक मार्ग में सभी होते हैं लेकिन जो हो रहा है, वह तो हो ही रहा है न, वह 'व्यवस्थित' ही है न? उनके लिए भी 'व्यवस्थित' तो है ही न? वे समझते नहीं हैं, वह बात अलग है।

दादाश्री : वह जो कुछ भी हो रहा है 'व्यवस्थित' है। लेकिन उस पर विश्वास नहीं बैठता और अग्रशोच जाती नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उनकी नहीं जाती लेकिन अपने समझने के लिए तो उनके साथ जो हो रहा है वह 'व्यवस्थित' ही है न?

दादाश्री : हाँ। लेकिन 'व्यवस्थित' तो जिसे हम ज्ञान देते हैं उनके लिए है, 'व्यवस्थित' अन्य किसी के लिए नहीं है। जिसे ज्ञान देते हैं उसे कहते हैं कि, 'अब तेरी पूरी लाइफ 'व्यवस्थित' के अधीन है। इसलिए तुझे घबराहट नहीं होगी। लेकिन हमारी आज्ञा में रहना।' अन्य लोग 'व्यवस्थित' के अर्थ का दुरुपयोग करेंगे। बाकी पूरा जगत् ही अग्रशोच वाला है।

प्रश्नकर्ता : उसका कारण यह है कि उनमें कर्तापद हैं, इसीलिए न?

दादाश्री : कर्तापन रहता है। जितना आत्मा का बढ़ता जाता है उतना कर्तापन कम होता जाता है, लेकिन कर्तापन रहता है। पहले आप कर्ता थे और कर्ता थे इसलिए आपको भूतकाल की उपाधि (परेशानी) रहती थी, वर्तमान की उपाधि रहती थी और भविष्य काल के लिए अग्रशोच रहती थी। अब आप कर्तापद में से छूट गए इसलिए भूतकाल गॉन, भविष्य काल व्यवस्थित के ताबे में, इसलिए वर्तमान में रहो। जैसे दादा रहते हैं न वर्तमान में, उस तरह से।

इसलिए फिर दादा फ्रेश दिखाई देते हैं। थके हुए दादा भी फ्रेश दिखाई देते हैं, इसका क्या कारण है? तो कहते हैं, वर्तमान में ही रहते हैं। यानी कि यह व्यवस्थित तो बहुत हेल्पिंग है। इसलिए काम निकाल लो। अभी आपकी कोई परीक्षा नहीं है, टेस्ट इग्जामिनेशन नहीं है। आपको आत्मा का भान हो गया है। उसके लिए आपको कोई टेस्ट इग्जामिनेशन नहीं देना पड़ता। अब, ये पाँच आज्ञाएँ आसान और सरल हैं। घर नहीं छोड़ना है, बाहर का नहीं छोड़ना है, बेटियों की शादी करवाने की छूट देते हैं। बेटों की शादी करवाने की छूट देते हैं।

आगे की फिकर-चिंता नहीं करनी है। सारी

अग्रशोच सौंप दी है, व्यवस्थित को और भूतकाल वह तो हाथ से निकल ही गया। वर्तमान में रहा यानी दादा के पास सत्संग में बैठे तो वर्तमान में है। आपको यह अक्रम विज्ञान दिया है इसलिए वर्तमान में रह सकते हो। यानी कि वर्तमान काल में हो अभी, ऐसा है यह विज्ञान! व्यवस्थित का ज्ञान, यह तो गजब का विज्ञान है।

राग-द्वेष के अधीन याददाशत

प्रश्नकर्ता : दादाजी, भूतकाल भूल नहीं पाते, ऐसा क्यों?

दादाश्री : भूतकाल अर्थात् याद करने पर याद नहीं आता और भूलना चाहें तो भुलाया नहीं जाता, उसका नाम ही भूतकाल। सारे संसार की बहुत इच्छा है कि भूतकाल भुलाया जा सके पर बिना ज्ञान के संसार की विस्मृति नहीं हो सकती।

अब, याददाशत किसके अधीन है, वह जानते हो? राग-द्वेष के अधीन। पूर्व जन्म में जो राग-द्वेष चार्ज किए थे, उनके अधीन है। वे अभी डिस्चार्ज हो रहे हैं। वे स्मृतियाँ डिस्चार्ज हो रही हैं।

वे स्मृति फल देकर जाती हैं। उनके फिर से आने का कोई कारण नहीं रहा। क्योंकि राग-द्वेष नहीं हैं न, इसलिए अब फिर से आने का कोई कारण नहीं रहा। और जिनके प्रति आपको राग-द्वेष हों न, उनकी स्मृति रहती है। जहाँ वीतराग वहाँ की स्मृति नहीं रहती। कनाडा रोज याद आता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : क्योंकि कनाडा से आप वीतराग हो। ऐसा है यह सब। हमारे राग-द्वेष पहले से ही कम थे, इसलिए सारी याददाशत चली गई

आकर, खत्म हो गई सारी और हम आपसे क्या कहते हैं? कि वर्तमान में बरतो।

जिसका जिस चीज़ पर जितना राग है, उतनी वह चीज़ उसे याद आया करती है और यदि द्वेष हो, तब भी वह चीज़ ज़्यादा याद आया करती है। बहू पीहर जाती है, तब सास को भूलना चाहती है फिर भी भूल नहीं पाती, क्योंकि द्वेष है, अच्छी नहीं लगती। जबकि पति याद आता रहता है। क्योंकि सुख दिया था इसलिए राग है। जिसने बहुत दुःख दिया हो या बहुत सुख दिया हो, वही याद आता है क्योंकि वहाँ राग-द्वेष से चिपका हुआ होता है। उस चिपचिपाहट को मिटा दें, तब विस्मृत हो जाएगा। अपने आप ही विचार आया करें, उसे 'याद' आना कहते हैं। यह सब धो दिया जाए तो स्मृति बंद हो जाती है और उसके बाद मुक्त हास्य उत्पन्न होता है। स्मृति है इसलिए तनाव रहता है। मन खिंचा हुआ रहता है इसलिए मुक्त हास्य उत्पन्न नहीं होता। सब को अलग-अलग याद आया करता है। एक को याद आता हो वह दूसरे को याद नहीं आता। क्योंकि सब के अलग-अलग ठिकानों पर राग-द्वेष होते हैं। स्मृति राग-द्वेष के कारण है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, उसे निकालनी तो पड़ेगी न?

दादाश्री : स्मृति इटसेल्फ बोलती है कि हमें निकालो, धो डालो। यदि स्मृति नहीं आती तो सब गड़बड़ हो जाता। वह यदि नहीं आएगी तो आप किसे धोएँगे? आपको मालूम कैसे होगा कि कहाँ पर राग-द्वेष हैं? स्मृति आती है, वह तो अपने आप निकाल होने के लिए आती है। चिपचिपाहट को मिटाने आती है। यदि स्मृति आए और आप उसे धो डालें, साफ कर डालें तो धुलकर विस्मृत हो जाएगी। याद इसलिए ही

आती है कि आपका यहाँ लगाव है, उसे मिटा दीजिए, उसका पश्चात्ताप कीजिए और फिर से ऐसा नहीं होगा, ऐसा दृढ़ निश्चय कीजिए। इतना करने से वह खत्म होती है तब वह विस्मृत हो जाती है। जो ज्ञान जगत् विस्मृत कराए, वह यथार्थ ज्ञान है।

जगत् विस्मृत होते ही वर्तमान में आनंद

शास्त्रकारों ने क्या लिखा है कि 'एक घंटा भी अगर जगत् विस्मृत रहे तो उसके जैसा अपार सुख और कोई नहीं।' लेकिन यह जगत् विस्मृत नहीं हो पाता। जिसे भूलना है वही याद आता है। जिसे भूलना हो न, वही पहले याद आता है। इसलिए ये लोग सामायिक करने बैठते हैं। सामायिक यानी अड़तालीस मिनट के लिए पूरे जगत् को विस्मृत करने के लिए प्रयत्न करने जाते हैं। वह जब दुकान को भुलाना चाहे तब दुकान (याद आती है), सबसे पहले ही गड़बड़ हो जाती है अंदर। उसके बाद जगत् विस्मृत नहीं हो पाता। एक घंटे तक भी यदि विस्मृत हो सके न तो दुःख कम हो जाए। जबकि यहाँ तो निरंतर विस्मृत रहता है। क्योंकि जहाँ एक की स्मृति हो वहाँ दूसरे की विस्मृति रहती है। एक (आत्मा) की स्मृति तो दूसरे (संसार) की विस्मृति। यानी वह (आत्मा) स्मृति में आ गया, यह (संसार) विस्मृत हो गया हमें। विस्मृत रहता है, इसीलिए आनंद रहता है न!

संसार बिल्कुल विस्मृत रहता है। कर्तापन वाला भाग छूट जाता है। अतः शुद्धात्मा वाला भाग तो है ही, वह तय हो गया। और इस प्रकार के अभ्यास से बहुत आगे बढ़ जाता है, बाद में।

जहाँ राग-द्वेष हैं, वहाँ जगत् की स्मृति है। राग-द्वेष निर्मूल हो जाएँ तो जगत् की विस्मृति है। संसार की नींव राग-द्वेष हैं और 'ज्ञान' की

नींव वीतरागता है! जिनमें राग नाम का रोग नहीं है, ऐसे वीतराग की कृपा से अनंत काल का रोग चला जाता है।

भूतकाल से छिपाते हैं वर्तमान की निर्बलता

प्रश्नकर्ता : आप जैसा कह रहे हैं वैसा तो भौतिक विज्ञान में और वैदिक शास्त्रों में भी कहते हैं कि सभी रोगों का मूल यह है कि, 'मनुष्य वर्तमान में नहीं जीता।'

दादाश्री : बस, हम इतना ही कहना चाहते हैं। भविष्य काल 'व्यवस्थित' के ताबे में है।

प्रश्नकर्ता : सभी मनोवैज्ञानिक ऐसी कोशिश कर रहे हैं कि मनुष्य वर्तमान में जीने लगे। भूतकाल की स्मृतियों में न डूबे और भविष्य काल की चिंताएँ करना बंद कर दे, तो उसका कल्याण होगा।

दादाश्री : हाँ, हम वही करते हैं। और कुछ नहीं। हम वर्तमान में रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, भूतकाल का मेमोरी से कोई कनेक्शन है या नहीं? और मेमोरी तो नैचुरल गिफ्ट है, ऐसा कहते हैं न?

दादाश्री : नहीं-नहीं। गिफ्ट यानी ऐसे ही कोई ईनाम दे दें ऐसा नहीं है। नैचुरल गिफ्ट कहने का भावार्थ क्या है कि जिस हद तक के उसके राग-द्वेष होते हैं उस हद तक की उसकी मेमोरी रहती ही है। अब, कितने ही लोगों को शास्त्रों के प्रति राग-द्वेष नहीं होते लेकिन दूसरी जगह पर होते हैं। वे शास्त्र पढ़ते रहते हैं फिर भी उन्हें याद नहीं रहता। इसलिए फिर उन्हें 'बेवकूफ' कहते हैं। अन्य बेहिसाब मेमोरी होती है उनकी! लेकिन वह काम नहीं आती न! लोग तो बेवकूफ ही कहते हैं न! यदि कोई शास्त्रों में

बहुत होशियार हो तो कहते हैं, 'बहुत मेमोरी वाला है।' यानी इसे लोग गिफ्ट कहते हैं। और मेमोरी हमेशा भूतकाल की ही रहती है न! मेमोरी को भूतकाल की ही चीज़ माना जाता है। हम सभी को मेमोरी से लेना-देना नहीं है। हम सभी की मेमोरी तो यहाँ ज्ञान में विस्मृत हो जानी चाहिए। जो स्मृति है वह विस्मृत हो जानी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन भूतकाल को तो हमेशा ही पढ़ा जा सकता है न! भूतकाल तो हमेशा ही, कोई भी कदम उठाया जाए या वर्तमान में कोई भी परिस्थिति आए तो उसे हल करने के लिए भी भूतकाल की ज़रूरत तो पड़ती ही है न? यानी कि पूरा मेमोरी पर ही आधारित है न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन वह मेमोरी तो है ही। उस मेमोरी के आधार पर ही पूरा जगत् चल रहा है। लेकिन वह रिलेटिव चीज़ है। हम रियल की बात कर रहे हैं। ये सभी रिलेटिव चीज़ें मेमोरी पर ही आधारित है। वर्तमान में सुख भोगो तो वर्तमान में गुनाह नहीं लगता कुछ। हम वर्तमान में नहीं रहते न, तो हमें ऐसी भूतकाल की याद आती हैं। 'वह कितना अच्छा था वहाँ पर, यात्रा में कैसे घूमते थे और कितने मजे करते थे और यह क्या और ऐसा-ऐसा', यदि ऐसा सब याद आए तो फिर वह क्या हो गया?

प्रश्नकर्ता : दखलंदाजी।

दादाश्री : इसलिए वर्तमान में रहो।

प्रश्नकर्ता : वह विस्मृत कैसे हो सकता है सभी का? आज जो मेरा भूतकाल है उसे आज बाहर रखने के लिए क्या करना चाहिए? वह तो मेमोरी पर ही आधारित है न? कि आज ज्ञानी होने के बाद भी उनका भूतकाल तो उजागर होना ही है न?

दादाश्री : रिलेटिव में तो भूतकाल का आलंबन लेकर ही चलता रहता है सब।

भूतकाल के सार के रूप में ही यह वर्तमान काल है। अतः भूतकाल आपको ज़रा भी याद नहीं करना पड़ता। आपकी बेटी का विवाह किया था तो आपके उस भूतकाल के सार के रूप में वर्तमान में यह आपके पास रहता ही है। इसलिए आपको कुछ भी नहीं करना है, वर्तमान में रहो। जो भी शर्तें रखी थीं आपने, जो भी तय किया था, वह सब आपके वर्तमान में रहता ही है। भूतकाल तो हमेशा चला ही जाता है। भूतकाल खड़ा नहीं रहता, चला ही जाता है।

यह पूरा जगत् जो है वह भविष्य काल को याद करता है कि, 'ऐसा होगा, वैसा होगा।' कुछ लोग भूतकाल को याद करते हैं। भूतकाल को क्यों याद करते हैं? अहंकार घायल है, उसका इलाज करता है!

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में जिसके पास कुछ नहीं होता, वह भूतकाल को याद करता है कि, 'हमारा तो ऐसा, हमारे बाप-दादा के वहाँ ऐसा था, ऐसा था', वे अभी पिछला याद करके आनंद मनाते हैं।

दादाश्री : वह तो, वर्तमान काल की निर्बलता को छिपाने के लिए, भूतकाल की सारी बातें करते हैं। सभी को बताते हैं कि हमारे पिता तो छत्रपति शिवाजी के परिवार से थे और ऐसी सारी बातें करते हैं। 'हम राणा प्रताप के वंश के हैं', ऐसा सब अपने आप ही कहते रहते हैं। राणा तो चले गए, अब तू क्या राणा है? वह बता न! लेकिन ऐसे जो लोग होते हैं न, उन्हें तो हम पहचान लेते हैं कि ये निर्बल व्यक्ति हैं। खुद का लाइट (कुछ) है ही नहीं, पराये दादा का लाइट लगाकर घूम रहा है, वह किस काम का? खुद का लाइट

होना चाहिए न? लेकिन लोग तो इस आधार पर ही जी रहे हैं। वर्ना वे किस आधार पर जीएँगे? जीने का साधन नहीं रहा इसलिए उस आधार पर जी रहा है। हम उसका वह छुड़वा नहीं सकते। लेकिन हम उसकी बात पर भरोसा नहीं कर सकते, हमें उसकी नोंध (नोट करना) नहीं करनी है। ऐसे तो सभी तरह के लोग होते हैं!

आप तो भूतकाल के ज्ञाता-द्रष्टा रहो यानी भूतकाल की कोई स्मृति आए तो उसके ज्ञाता-द्रष्टा रहो कि, 'भाई, यह ऐसा कह रहा है, वैसा कह रहा है।' अब, यह अर्थहीन है, इसे स्वीकारने की ज़रूरत नहीं है। देखने जैसा है और जानने जैसा है। और क्या कह रहा है और क्या नहीं, उस पर से तो आपको पता चलता है कि किस बात पर राग था और किस बात पर द्वेष था।

ज्ञानी दशा में याददाशत नहीं

प्रश्नकर्ता : आपने एक बार कहा था न, वह अभी भी समझ में नहीं आता। भूतकाल और भविष्य, ऐसा कुछ भी नहीं है, सबकुछ वर्तमान ही है।

दादाश्री : है वर्तमान। भूतकाल और भविष्य काल तो यह सब जिन्हें याद रहता है न, उन्होंने नाम रखा है। जिसे याद ही नहीं रहता उनके लिए कभी भूतकाल भी नहीं होता है और भविष्य काल भी नहीं होता। हमारे लिए भूतकाल, भविष्य काल है ही नहीं। क्योंकि हमें कुछ भी याद ही नहीं आता न! भूतकाल में साल भर पहले किसी ने आपके साथ ऐसा किया था, आपकी चाचीसास गुजर गई थी, वह सब आपको याद आता है और हमें वह भूतकाल याद नहीं आता। और भविष्य काल का आपको याद आता है कि साठ साल के हो जाएँगे तो हम क्या करेंगे? अपने लिए कुछ तो चाहिए न!

ऐसा कुछ याद आए न, वह भूतकाल और भविष्य काल। इस याददाशत की वजह से है भूतकाल, भविष्य काल। जिसे याद ही नहीं आता उसके लिए वर्तमानकाल होता है।

हमें याद ही नहीं आता। अतः हमारे लिए हमेशा वर्तमानकाल। यानी यहाँ बैठे हो तब तक यहाँ के और वहाँ बैठे हो तो वहाँ के।

कल कौन-सा वार है, हमें वह भी याद नहीं होता, फिर भी जगत् चलता है। किसी से पूछें तब तो तीन लोग बोल उठते हैं कि रविवार है। याद रखने वाले बहुत सारे लोग हैं।

वीतराग किसे कहा जाएगा? आत्मा के अलावा दूसरा कुछ भी याद ही नहीं आए। आत्मा और आत्मा के साधनों के अलावा दूसरा कुछ भी याद ही नहीं रहे। जितनी स्मृति गई, उतने वीतराग हुए। वीतराग को किसी भी प्रकार की स्मृति नहीं होती। जगत् की विस्मृति को ही 'मोक्ष' कहा है।

स्मरणशक्ति के लिए पूरा जगत् प्रयत्न करता है, परंतु स्मरणशक्ति नाम की कोई शक्ति नहीं है। स्मरणशक्ति, वह राग-द्वेष के कारण है। मुझे राग-द्वेष नहीं हैं इसीलिए मुझे स्मरणशक्ति नहीं है। अभी आपको आपकी स्मृति पर से पता चलता है कि इस जगह पर राग है और इस जगह पर द्वेष है। इसलिए ही तो लोगों ने जगत् विस्मृत करने के लिए खोज की है।

जिसे जिसमें राग अधिक उसमें वह 'एक्सपर्ट' (निपुण) हो जाता है। मुझे अध्यात्म पर राग था, इसलिए मैं अध्यात्म में 'एक्सपर्ट' हो गया! कुछ को शास्त्रों पर बहुत राग होता है, इसलिए उन्हें शास्त्रों की ज़बरदस्त स्मृति होती है। इसमें आत्मा पर राग हो जाए तो दूसरी सब जगह, संसार में विस्मृति कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : जगत् किस तरह विस्मृत करें? भूलें कैसे? वह एक प्रश्न है।

दादाश्री : जगत् एक घंटा भी विस्मृत हो सके ऐसा नहीं है। एक घंटे जगत् विस्मृत करने के लिए हजारों रुपया खर्च करें तो भी वह विस्मृत हो, ऐसा नहीं है। तरह-तरह का याद आता है। भोजन करते समय प्रियजन जो बीमार हो वही याद आते हैं! अरे, तू किसलिए याद आया? अर्थात् स्मृति ही दुःख देती है।

प्रश्नकर्ता : परंतु फिर ऐसी शंका होती है कि जगत् विस्मृत रहे तो सेल्सटैक्स, इन्कमटैक्स के केस का निकाल किस तरह करेंगे? उसमें मुसीबत पड़ेगी न?

दादाश्री : वैसा नहीं है। जगत् विस्मृत रहे और संसार के काम हों, ऐसा है। बल्कि बहुत अच्छी तरह, सहज रूप से हों, वैसा है।

ज्ञानी को दिखाई देता है यथार्थ दर्शन से

यह स्मृति ही पीड़ा उत्पन्न करती है। यह ज्ञान होने से पहले मुझे बहुत ही स्मृति थी, ज़बरदस्त स्मृति थी। वह मुझे बहुत पीड़ा देती थी, रात को सोने भी नहीं देती थी। उसका हिसाब निकाला कि किस जगह पर दुःख है? परंतु ऐसे देखो तो हर प्रकार से हम सुखी थे, परंतु इस स्मृति का अपार दुःख था! हमें याद बहुत रहता था, एट ए टाइम सबकुछ याद रहता था। परंतु स्मृति पौद्गलिक चीज़ है, चेतन नहीं है। फिर ज्ञान होने के बाद 'दिखने' लगा। स्मृति वाला दर्शन नहीं, परंतु यथार्थ दर्शन हुआ।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि आपको स्मृति नहीं है, परंतु आज से दस वर्ष पहले आपने कोई घटना या उदाहरण दिया हो, उसे आज फिर से आपके मुख से सुनते हैं तब एक्ज़ेक्टली उसी

प्रकार से, उसी लिंक में, एक-एक शब्द क्रमबद्ध टेप की तरह निकलता है, वह क्या होगा? वह कौन-सी शक्ति है?

दादाश्री : राग-द्वेष के अधीन 'मेमोरी' (स्मृति) है। इसलिए उसमें 'एक्ज़ेक्ट' नहीं होता। हमारे मुख से जो निकलता है वह दर्शन के आधार पर निकलता है, इसलिए 'एक्ज़ेक्ट' होता है। हमें सब दिखता है। बचपन में चार वर्ष का था तब से अभी तक का सारा ही में देख सकता हूँ, हमें याद नहीं करना पड़ता। इस तरह चौदह साल की उम्र का देखूँ तो वह दिखता है, बीस साल की उम्र का देखूँ तो वह दिखता है।

हमारे पास पूछने आने वालों की फाइल जाँच करके हमें जवाब देने पड़ते हैं। इससे पहले क्या बात की थी, अभी क्या है, उन सभी 'कनेक्शन' (संबंध) में जवाब होता है। हर एक की फाइल अलग-अलग है, इसलिए जवाब अलग-अलग होता है। जवाब उसकी फाइल के अधीन होता है। अब कोई कहेगा कि, 'दादा, आप एक ही प्रकार का जवाब सबको क्यों नहीं देते?' अरे, ऐसा नहीं है। हर एक की फाइल अलग-अलग है, हर एक के रोग अलग-अलग है, इसलिए हमारे पास शीशियाँ अलग-अलग और दवाई भी अलग-अलग होती है। हर एक के क्षयोपशम अलग-अलग होते हैं। हमारी सैद्धांतिक बात में कहीं भी परिवर्तन नहीं होता। उसे तो तीनों काल में कोई भी काट नहीं सकता, वैसी होती हैं। इन व्यवहारिक प्रश्नों का हल हर एक निमित्त के अधीन होता है।

आप मुझे जो याद करवाते हो न, वह सबकुछ मुझे दिखता है। व्यापार का भी हमें हमारे भागीदार कुछ पूछें, तब सबकुछ ही दिखता है। पुल दिखता है, उसके सारे खंभे दिखते हैं, कहाँ

क्या है और क्या नहीं, वह सबकुछ दिखता है। याद करवाओ तब उपयोग केन्द्रित करते हैं और उससे सबकुछ क्रमबद्ध दिखता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् उपयोग से दिखता है न ?

दादाश्री : याद करवाए तब उपयोग वहीं जाता है। क्योंकि वह उपयोग उधर नहीं जाए तो व्यवहार सारा टूट जाएगा।

हमें तो पूछते हैं कि 'आपको यह सब पता कैसे चलता है?' तो, हमें दिखाई देता है। आप पूछो कि, 'उस दिन हम यात्रा में गए थे और ऐसा हुआ था, वह ठीक है या नहीं?' तब मैं कहता हूँ कि, 'वह ठीक है।' लेकिन हम देखकर बताते हैं। जबकि आप याद रखा हुआ बताते हो। बोलते ही हमें यों दिखाई देता है, एक्जैक्टनेस, 'जैसा है वैसा' हमें दिखाई देता है।

यानी हमें कुछ भी याद ही नहीं रहता। और आप हमारे पास बैठो तो आप भी अपनी यादें भूल जाओगे। वातावरण का असर होता है। इस विज्ञान के बाद याद करने को कुछ भी नहीं रहता।

दिखा हमारा वर्तमान का भय

ज्ञान होने के बाद मैं खुद की परीक्षा लेने गया था। सोनगढ़ में हमने लकड़ी का बिजनेस किया था। तो वहाँ पर जो डांग का जंगल है न, वहाँ से उसकी शुरुआत होती है। मैंने एक व्यक्ति से पूछा कि, 'यहाँ कोई बाघ रहता है?' तब कहा, 'यहाँ वाघडुंगरी (गाँव) है वहाँ पर बाघ रहते हैं।' तब मैंने कहा, 'हमें वहाँ जाना है।' तो कहने लगा, 'साहब, वहाँ क्या काम है? वहाँ गए हुए लोग भी वापस आ जाते हैं और आप वहाँ जाने की बात कर रहे हैं?' मैंने कहा कि, 'मुझे परीक्षा लेनी है। खुद की परीक्षा!' मुझे ऐसा लगता है कि मेरा सभी प्रकार का भय

चला गया है। लेकिन गया है या नहीं, उसका प्रमाण चाहिए।

क्योंकि भूतकाल का भय चला गया है, वह प्रमाणित हो चुका है कि घड़ी भर पहले क्या हुआ, उन सब का अंदर कोई असर नहीं होता, परिणाम उत्पन्न नहीं होते। घड़ी भर पहले चाहे कुछ भी हो गया हो या सबकुछ जल गया हो या सब मर गए हों, तो अंदर उसका कोई असर नहीं होता। यानी कि भूतकाल की बात प्रमाणित हो गई।

भविष्य काल का मेरे पास प्रमाण है। क्योंकि मैं व्यवस्थित देखकर आया हूँ। यह जगत् 'व्यवस्थित' ही है, ऐसा मैं देखकर आया हूँ। और इन सभी को मेरे अनुभव के अनुसार व्यवस्थित का ज्ञान दिया है कि जगत् 'व्यवस्थित' ही है। अतः भविष्य काल का भय मुझे रहा नहीं। ऐसा तो मुझे सौ प्रतिशत विश्वास है। क्योंकि दूसरों के भविष्य का भय मैंने निकाल दिया है, तो मेरा कैसे रह सकता है? यानी कि भूतकाल और भविष्य काल के, दोनों भय चले गए।

अब वर्तमान काल की स्थिति, उसके लिए मैंने कहा कि टेस्ट तो हमें करना ही चाहिए। यों ही कह दें कि, 'नहीं, नहीं, मुझे किसी चीज़ का असर नहीं होता', तो ऐसा नहीं चलेगा। अतः टेस्ट तो करना ही चाहिए न? तो वाघडुंगरी पर गए। वहाँ के दो लोगों को साथ में ले गया, वहाँ के आदिवासी थे। वे दोनों लोग घबरा रहे थे, मुझसे कहने लगे कि 'साहब, हम आपके साथ आ रहे हैं, लेकिन हम तो कहीं भी पेड़ पर चढ़ जाएँगे, लेकिन आपको तो पेड़ पर चढ़ना भी नहीं आता।' मैंने कहा, 'देख लेंगे हम। लेकिन मुझे यह देखने तो दो कि भय लगता है या नहीं?' तब फिर हम ऊपर चढ़े। फिर मुझे दिखाया कि

ये यहाँ अंदर 'गुफा' है, इन दो-तीन गुफाओं में एक-दो बाघ रहते हैं। फिर कहने लगे, 'साहब, अब हम चलें।'

प्रश्नकर्ता : वापस चलें, ऐसा न?

दादाश्री : हाँ, अब हमें वापस चलना चाहिए। आपने देख लिया न, कहने लगे। मैंने कहा, 'देख लिया लेकिन मुझे अभी अनुभव कहाँ हुआ है? जितना अनुभव आपको है उतना ही मुझे है। अतः ऐसा करो कि आप चले जाओ, मैं यहाँ बैठा रहता हूँ। मुझे यह देखना है।' टेस्ट करना हो तो फिर थर्मामीटर से जाँच करना ही पड़ेगा न? थर्मामीटर से जाँचे बगैर टेस्ट कैसे हो सकता है? वे लोग खड़े रहेंगे उसमें कैसा टेस्ट हो पाएगा? उससे तो उनका भी हुआ और हमारा भी टेस्ट हुआ। वे लोग खड़े हैं यानी इसे तो हूँफ़ (सहारा) कहा जाएगा। इसलिए मैंने उनसे कहा कि, 'आप चले जाइए।'

वे लोग थोड़े ही दूर गए होंगे। दो सौ-तीन सौ फुट भी अंदर से कुछ बोला कि, 'ये लोग चले जाएँगे, फिर इन लोगों को सुनाई नहीं देगा और इस तरफ अगर बाघ आ जाएगा तो?' तब मैं समझ गया कि हम इसमें फेल हो गए हैं। अतः मैंने उन्हें आवाज़ लगाई। मैंने कहा कि, 'वापस आओ। भाई, वापस आओ।' तो वे बेचारे दौड़ते-दौड़ते वापस आए। उन्होंने समझा कि ये डर गए हैं। मुझसे कहने लगे, 'हम मना कर रहे थे न साहब, कि यहाँ रहने जैसा नहीं है।' मैंने कहा कि, 'मुझे यहाँ पर इतना ही देखना था।' अभी तक बाघ तो मुझे दिखाई ही नहीं दिया। अंदर वालों ने डरा दिया है मुझे। बाघ तो मुझे दिखाई ही नहीं दिया, उसने अपना मुँह नहीं दिखाया, दहाड़ नहीं लगाई। मुझे अंदर वालों ने डरा दिया कि अभी निकलकर आ जाएगा

तो? अरे! यह हमारा वर्तमान का भय तो चल ही रहा है।

अतः इस वर्तमान के भय से मुक्त होने जैसा है। फिर हम उस भय से भी मुक्त हो गए। अब अंबालाल ज़रा डर जाएँ तो मुझे क्या? अंबालाल से मुझे क्या लेना-देना? ज़्यादा लेन-देन नहीं है न! पड़ोसी के तौर पर जंजाल है! वह तो, हमें अभी तक एकता बरतती थी, वह एकता हमने तोड़ दी कि भाई, अब वह भी नहीं और यह भी नहीं। हमारा ऐसा और कोई व्यवहार ही नहीं रहा। पड़ोसी के अलावा अन्य कोई व्यवहार ही नहीं है न! मैं जो कहना चाहता हूँ, जिस सेन्स में वह समझ में आ रहा है न?

मैंने देखा न लेकिन! यह तो, जब यह बात निकली, तब वह बात मुझे याद आई। हर एक बात की मैंने ट्रायल (आज़माइश) की। इस दुनिया में मैं एक भी चीज़ की ट्रायल किए बिना नहीं रहा हूँ। और ट्रायल यानी कि इस तरह अनुभव हो जाने के बाद ही मैं आगे बढ़ता हूँ। अतः इसकी ट्रायल की और यह देखो न, यहाँ यह बात निकली तब न? वर्ना क्या मुझे कुछ याद रहता है?

...तब आत्मस्वरूप ही हो जाते हैं

प्रश्नकर्ता : अन्य सभी बातों में तो हमें रहता है कि चंदूभाई को होने वाला है लेकिन जब बाघ आए तब चंदूभाई को होने वाला है, ऐसा नहीं होता न?

दादाश्री : नहीं, यों रूबरू हाज़िर हो जाए न, यह तो मेरी बात है, मेरा स्केल बना रहा हूँ। रूबरू हाज़िर हो जाए तो, मुझे कुछ नहीं होगा। लेकिन हाज़िर नहीं था और आ रहा है ऐसा कहा तो भय उत्पन्न हो गया। अतः कहाँ

पर कमजोरी रह गई है न, उसकी बहुत सूक्ष्मता से जाँच कर लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : कोई थप्पड़ मार दे तो होता है कि चंदूभाई को मारा है लेकिन बाघ आ जाए तो चंदूभाई को भय हो रहा है, वह कैसे रहेगा?

दादाश्री : उसके लिए मैं मना नहीं करता, थोड़ा भय आपको होगा, पर मुझे कहाँ पर होता है, कहाँ तक का होता है, वह मेरा टेस्ट बता रहा हूँ। आपका टेस्ट अलग और मेरा टेस्ट अलग।

उसे देखते ही हमारे भीतर के परिणाम कैसे हो जाएँगे, आत्मस्वरूप, संपूर्ण आत्मस्वरूप हो जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : आपसे संबंधित, इस घटना से संबंधित नहीं, ज्ञानी सभी अलग-अलग भूमिकाओं से परे होते हैं। हमारे मन तो सभी शिखर जैसे, लेकिन यह तो बाघ का उदाहरण दिया। उस बाघ को वास्तविक स्वरूप में अर्थात् बाघ रूप से देखना और उस प्रकार से व्यवहार करना।

दादाश्री : ऐसा व्यवहार ही नहीं है न, आत्मज्ञानी का।

प्रश्नकर्ता : भाग जाना, मैं आपकी बात नहीं कर रहा हूँ, ज्ञानियों की बात बता रहा हूँ। यदि बाघ आए तो बाघ के स्वरूप में देखना, हाथी आए तो हाथी के स्वरूप में देखना, बाजू में हट जाना। बाघ को यथार्थ स्वरूप से देखना और उस प्रकार से व्यवहार करना, वह ज्ञानी का तरीका है या नहीं?

दादाश्री : हाँ, वही ज्ञानी का तरीका है। उसे यथार्थ रूप से देखना, वह ज्ञानी का तरीका है। उसके रूप में फर्क नहीं है लेकिन फिर भी यथार्थ रूप से देखने के बावजूद भी यदि भय उत्पन्न हो जाए तो वह क्या है?

यह तो सिर्फ टेस्ट करके देखना था। मुझसे किसी ने पूछा था, 'आप संपूर्ण रूप से निर्भय रह सकते हैं?' तब मैंने कहा, मैंने खोज करते-करते कहीं-कहीं टेस्ट किए हैं। वे टेस्ट लेते समय निर्भय रह पाते हैं लेकिन कहीं-कहीं निर्भय नहीं रह पाते।

खुद निर्भय, देह में भय

प्रश्नकर्ता : मैं निर्भय हूँ ऐसा भान हुआ है, उस रूप में बरतने तक कैसे पहुँचा जा सकता है?

दादाश्री : तुझे निर्भय होने का भान नहीं हुआ ?

प्रश्नकर्ता : हुआ है।

दादाश्री : भान तो हो गया, फिर निर्भय हो गये कहा जाएगा। निर्भय पद का पहले ज्ञान होता है, फिर उसका भान होता है। भान हुआ मतलब निर्भय पद आ गया।

प्रश्नकर्ता : पर निर्भय हैं ऐसा ज्ञान हुआ, ऐसा भान हुआ, अब उस रूप से बरतने तक तो यह विज्ञान जानना जरूरी है न? तभी निर्भय पद आचरण में आयेगा न?

दादाश्री : हाँ, निर्भय हो जाने के बाद वह तो सब आचरण में होता है। बड़ा धमाका हुआ और तेरा शरीर कांप उठा, उससे हम तुझे भय वाला नहीं मानते। हम जानते हैं कि यह संगी चेतना का भय है, तुझे भय नहीं है। मतलब जो माल भरा हुआ है वह इस संगी चेतना का है, यह जो कांपता है, लेकिन खुद निर्भय है। अब ज्ञान लेने के बाद भय होता होगा? यदि भय है तो, तू वही चंदूभाई ही है।

प्रश्नकर्ता : बाघ की माँद के उदाहरण में वर्तमान भय की बात थी। उसमें बाद में कहा है

कि, 'ए. एम. पटेल' (पूज्य दादाश्री का नाम) को भय लगता था। यह जिसे वर्तमान का भय लगता था तो उससे तो हमने नाता तोड़ दिया कि, जिसे भय लगता है न, वह मैं नहीं हूँ। साथ में ऐसा भी कहा कि 'ए. एम. पटेल' भी निर्भय हो जाने चाहिए। वह भय भी खत्म हो जाना चाहिए।

दादाश्री : नहीं। बल्कि है ही निर्भय। यह अभी जो थोड़ा सा भय है वह व्यवहार से है। वैसे 'ए.एम.पटेल' भूतकाल, भविष्य काल से निर्भय हो गये हैं। केवल इस वर्तमान काल से तो वह तलाशने गये थे पर उसमें 'वे' फेल हुए। फिर बंद कर दिया। क्योंकि माल भरा हुआ है यह तो। पर 'हम' तो निर्भय हो गये हैं। किसी तरह का भय, किसी जगह, किसी दिन, हमें कभी नहीं लगा। और कभी बमबारी होने लगे धड़ाधड़, तब भी ज़रा-सा भी भय नहीं।

प्रश्नकर्ता : मतलब ऐसा पद हमारे अनुभव में रहना चाहिए न?

दादाश्री : रहा हुआ ही है, पर आपको लगता है कि मैं ही ऐसा (डरपोक) हूँ, तो फिर? अरे, नहीं हैं डरने जैसा! परमात्मा हैं ये तो। तुझे निर्भय जैसा नहीं लगता, किसका भय लगता है? मेरा क्या होगा ऐसा?

प्रश्नकर्ता : क्या होगा ऐसा तो नहीं होता।

दादाश्री : तब? 'क्या होगा', ऐसा भविष्य काल का भय चला गया, अब वर्तमान का रहता है, नहीं? वह भी चंदूभाई को रहता है न? तुझे नहीं रहता न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, चंदूभाई को, मुझे नहीं।

दादाश्री : हो गया, तो फिर क्या? भाई, तुझे कैसा है?

प्रश्नकर्ता : मुझे ये जो कुत्ते हैं, गाय हैं, उनसे डर लगता है। छोटा था तब एक बार गाय ने सींग मारा था।

दादाश्री : मगर वह (डर) शुद्धात्मा को तो नहीं हैं न? वह तो लोग यों ही पानी देखते हैं न, तब मुझसे कहते हैं, 'मुझे यह पानी देखकर घबराहट होती है।' अरे, पिछले जन्म में डूब गया था! उसका असर रह गया है। साँप देखते ही घबराहट होने लगती है, पसीना छूट जाता है। पिछले जन्म में साँप के काटने से मर गया होगा। अपनी बीवी को देखता है तो तुझे भय लगता है। क्योंकि पिछले जन्म में बीवी ने गालियाँ-वालियाँ बहुत सुनाई थीं न, इसलिए वह असर अभी भी रह गया है। वर्ना वह आया कहाँ से? वह कहाँ जाता? इस जन्म में अभी अनुभव किया नहीं, तो यह आया कहाँ से? पिछले जन्म का अनुभव सब ओपन (खुल्ला) हुआ।

अंत में मिला यह अनुभव ज्ञान

ये बाह्य प्रयोग (क्रियाएँ) सारे, निकाल करने योग्य चीजें हैं। बाह्य प्रयोग और आंतरिक प्रयोग, यह आंतरिक प्रयोग यानी (जागृति) देखना-जानना, सत्संग करना ये सब, आज्ञा में रहना और यदि बाह्य प्रयोग को बंद करें तो दूसरा सब कच्चा पड़ जाता है। बाहर वाला बाधा रूप नहीं है। यह तो विकल्प है। एक प्रकार का भय है कि मुझे ऐसे काट लेगा कि जैसे काट लेगा। वास्तव में बाधा रूप नहीं है। ज्ञान हाज़िर तो दुनिया गैरहाज़िर। ज्ञान गैरहाज़िर तो दुनिया हाज़िर।

ऐसा है न, पड़ोस में कोई न हो, अकेला ही हो न, तो उसे सूझाने वाले अंदर हैं। लेकिन सभी साथ में हों तो कौन सूझाएगा? अकेला हो तो सूझ पड़ती है। अतः यह जगत् अकेला नहीं

रहता, उसी की झंझट है न! जबकि मैं अकेले घूमा हूँ। क्योंकि मेरा स्वभाव बचपन से ही ऐसा था कि एक रास्ता, यहाँ से जो रास्ता ऐसे घूमकर इस तरह से जा रहा हो न, तो मेरी दृष्टि से तुरंत समझ में आ जाता था कि यह गलत है, रास्ता उल्टा है। बचपन से यह आदत, लोगों के रास्ते पर नहीं चलना, खुद की इच्छानुसार रास्ते बनाना। इस वजह से मार भी पड़ी है कितनी ही बार, काँटे भी चुभे हैं। लेकिन आखिर में तो इसी रास्ते से जाना है, ऐसा तय था। तो इस तरह यह रास्ता (अक्रम मार्ग) ठीक लगा हमें। कई जन्मों से मार पड़ी होगी लेकिन अंत में ढूँढ निकाला, यह बात पक्की है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि जिज्ञासा आपके पास शुरू से ही थी।

दादाश्री : हाँ, शुरू से।

प्रश्नकर्ता : पिछले जन्म से।

दादाश्री : वह तो कई जन्मों से, पिछले जन्म से नहीं। और इस हद तक की जिज्ञासा कि भविष्य की चिंता नहीं होनी चाहिए! यदि जन्म लिया है तो भविष्य की चिंता क्यों होनी चाहिए? अतः इस 'व्यवस्थित' की खोज कर लाया हूँ।

प्रश्नकर्ता : यानी कि जिज्ञासा बहुत तीव्र थी। उसकी मात्रा जितनी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे ज्ञान का प्रकाश आता रहता है।

दादाश्री : हाँ, जरूर प्रकाश आता रहता है, सूझ पड़ती जाती है, सबकुछ हो जाता है। पर अकेला हो तब।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अकेले की ही बात है।

दादाश्री : फिर यदि दोस्तों की या बीवी की सलाह ली तो बिगड़ेगा।

यह सारा हमारा अनुभव ज्ञान है। हमारे अनुभव की श्रेणियों में आया हुआ ज्ञान है। वना कोई कह नहीं सकता न, कि, 'भाई, अब आपका व्यवस्थित है'। ऐसा कोई कह नहीं सकता! चिंता करनी बंद नहीं करवा सकता न! किसी ने ऐसा नहीं कहा कि 'व्यवस्थित' है।

फर्क, क्रमबद्ध और व्यवस्थित में

प्रश्नकर्ता : क्रमबद्ध पर्याय और व्यवस्थित में क्या अंतर है?

दादाश्री : क्रमबद्ध पर्याय तो, आपकी भाषा में आपको समझाता हूँ कि इक्यावन लिखे हों और उसके बाद में क्रमबद्ध पर्याय जानने हों तो फिर बावन, तिरपन, चौवन, पचपन, छप्पन, सत्तावन वे सारे क्रमबद्ध पर्याय हैं। और कोई उल्टी खोपड़ी का व्यक्ति हो तो पचास, उनचास, अड़तालीस, सैंतालीस, वे सारे क्रमबद्ध पर्याय। अब क्रमबद्ध पर्याय और व्यवस्थित में तो बहुत अंतर है। व्यवस्थित, वह तो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। यह क्रमबद्ध पर्याय नहीं है।

यह तो, व्यवस्थित अगले दिन से ही अमल में आ जाता है तुरंत। यह ज्ञान मिलता है तब वह, 'खुद शुद्धात्मा है', ऐसे भान में आ जाता है। 'व्यवस्थित कर्ता है', वह तुरंत समझ जाता है और वह काम करता ही रहता है। व्यवस्थित के ज्ञान से फिर चिंता-वरीझ नहीं करता और काम चलता रहता है। (नया) कर्म बंधन नहीं होता, चार्ज नहीं होता, क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते। 'मैं कर रहा हूँ', ऐसा भान हो, तभी कर्म चार्ज होता है न!

प्रश्नकर्ता : यानी कि व्यवहार में समझने के लिए व्यवस्थित अच्छा है।

दादाश्री : व्यवस्थित बहुत अच्छा है।

व्यवस्थित, एकज्जेक्टली, फिर अगले दिन से ही उसे भविष्य काल के विचार करने का स्कोप ही नहीं रहता न! अग्रशोच अगले दिन से बंद ही हो जाती है! और उसे बंद करने के लिए ही यह दिया है क्रमबद्ध पर्याय, लेकिन बंद नहीं हो पाता। उसमें उलझन रहती है। क्रमबद्ध पर्याय अर्थात् कैसे पर्याय होंगे और कैसे नहीं, वह उलझन रहती है। जबकि इसमें तो पूरी एकज्जेक्टनेस आ गई।

इन दोनों में अंतर आसमान-ज़मीन का

प्रश्नकर्ता : आप जिसे व्यवस्थित कहते हैं, वह व्यवस्थित और भवितव्यता अथवा भाविभाव या नियति वगैरह शब्दों का जिसके लिए उपयोग होता है, वे सब एक ही हैं या भिन्न हैं?

दादाश्री : क्या कह रहे हो? तुलना हो सकती है क्या? कहाँ यह और कहाँ इसकी तुलना! व्यवस्थित शब्द, यह तो नया वैज्ञानिक शब्द है, इसलिए मैंने अभी तक पचास हजार लोगों से कहा है कि आपको अग्रशोच नहीं होगी। आपका भविष्य व्यवस्थित के हाथ में है। 'अग्रशोच', अभी तक तो सभी जगह अग्रशोच ही की थी, ज्ञानियों ने भी!

प्रश्नकर्ता : शास्त्रों में जो भाविभाव या भवितव्यता या नियति शब्द का उपयोग होता है, उसकी परिभाषा भी तो ऐसी ही है कि जो होना है, जैसा ज्ञानियों ने देखा है, वैसा ही होता रहता है। अपनी इच्छानुसार नहीं होता।

दादाश्री : नहीं-नहीं। तब तो पुरुषार्थ रहा ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : पुरुषार्थ सापेक्ष है न?

दादाश्री : नहीं-नहीं। ऐसा सिर्फ समकिति जीवों के लिए कहा है! वर्ना ये पाँच वाक्य होते ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : इन पाँच कारणों के इकट्ठे होने से ही कोई कार्य होता है। अतः भवितव्यता या नियति की परिभाषा और यह व्यवस्थित इन दोनों की परिभाषा, मिलती-जुलती ही लगती है।

दादाश्री : नहीं। ज़रा सा भी लेना-देना नहीं है। व्यवस्थित तो जिन्होंने यह ज्ञान लिया है उन्हें बताया है कि, 'भवितव्य काल व्यवस्थित है, तू अपनी तरह से सारा काम करता जा। भूतकाल गॉन, भविष्य काल व्यवस्थित के ताबे में हैं और वर्तमान में रहो'। इसलिए वर्तमान में रहते हैं, तो नो वरीज़, एक भी कर्म नहीं बंधता। इतने ही कर्म बंधते हैं कि एक जन्म, दो जन्मों के लिए ही, क्योंकि हमारी आज्ञा का पालन करते हैं, उसके एवज़ में!

ज्ञान से पहले की दादा की अनुभूतियाँ...

आज्ञा पालन करने से निरंतर समाधि रहती है, मोक्ष ही बरतता है! यह तो हमारी चखी हुई चीज़ आपको दी है न! अनुभव की हुई चीज़ दी है न!

प्रश्नकर्ता : आपने पाँच आज्ञा का कैसा अनुभव किया है?

दादाश्री : इन सब ने जिस प्रकार से अनुभव किया है, उसी प्रकार से। उन्हें पूछकर देखना न, तो पता चल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा था कि आप अक्रम में से नहीं आए हैं।

दादाश्री : नहीं, मैं क्रमिक में से आया हूँ।

प्रश्नकर्ता : तो आपको अक्रम का अनुभव नहीं है, लेकिन आपने ऐसा बताया कि आपने अक्रम ज्ञान द्वारा देखा है।

दादाश्री : हाँ, ठीक है। लेकिन यह सारी

कमाई क्रमिक में से ही की है और उदय में आ गया अक्रम। लेकिन मेहनत बहुत की है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आपके अनुभव अलग तरह के होंगे न, दादा ?

दादाश्री : लेकिन वे तो बहुत लंबे हैं। बहुत बड़ा इतिहास बन जाएगा पूरा। वह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो दो शब्दों में कही जा सके।

प्रश्नकर्ता : दादा, पाँच आज्ञा में से कौन सी आज्ञा का आपको सब से ज्यादा अनुभव हुआ है ?

दादाश्री : व्यवस्थित का ज्यादा अनुभव हुआ है। शुरू से ही व्यवस्थित लेकर आया था। इसीलिए इन पाँच आज्ञाओं में व्यवस्थित की खोज (हमारी) है। मुख्य खोज हमारी व्यवस्थित की है। वर्ना यह दुनिया भविष्य की चिंता से रहित है ही नहीं। उस चिंता और अग्रशोच को इस व्यवस्थित ने उड़ा दिया।

प्रश्नकर्ता : उसे उड़ा देने से सारी प्रॉब्लम चली गई न ?

दादाश्री : सभी प्रॉब्लम छूट गई और फिर अनुभव में आया कि 'नहीं, वास्तव में व्यवस्थित ही है'। आयोजित होता तो टिक नहीं पाता।

व्यवस्थित शक्ति रखती है वर्तमान में

यह व्यवस्थित का ज्ञान तो पहली बार ही दिया जा रहा है। फर्स्ट टाइम वर्ल्ड में दिया जा रहा है कि यह व्यवस्थित है। इसलिए फिर उपाधि खत्म हो गई न हम सभी को!

यानी व्यवस्थित क्या कहना चाहता है, कि भूतकाल चला गया। बुद्धिशाली भी भूतकाल के लिए नहीं रोते। एक सेकन्ड पहले जब कट गई हो, उसके बाद बुद्धिशाली वहाँ पर एडजस्टमेन्ट ले लेते हैं कि भाई, अब उसके लिए रोने की झंझट

छोड़ दो। उसका उपाय नहीं है। यानी बुद्धिशाली भी भूतकाल को भूल जाते हैं। क्या होता है ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वे भूल जाते हैं।

दादाश्री : भूतकाल से बिल्कुल निर्लेप रह सकते हैं लोग। बुद्धिशाली, मैंने कितने सारे बुद्धिशाली को देखा है, कि जो भूतकाल यानी कि अभी एक घंटे पहले उनके लाख रुपये चले गए हों तब भी वे बिल्कुल निर्लेप रह पाते हैं, उससे। परंतु भविष्य काल से व्यक्ति निर्लेप नहीं रह पाता। भविष्य के विचार तो उसे आते ही रहते हैं। अतः वर्तमान को भोग नहीं पाता। व्यक्ति क्या नहीं भोग पाता ?

प्रश्नकर्ता : वर्तमान।

दादाश्री : यानी वर्तमान में जो यह वैभव होता है उसे वह भोग नहीं पाता। और आगे के भविष्य में ही उसकी सारी चित्तवृत्तियाँ और सब काम करती रहती हैं। यह जगत् भोग नहीं पाते। कौन भोग पाते हैं ? मेरे जैसे ज्ञानी भोग पाते हैं। क्योंकि जिन्हें व्यवस्थित का ज्ञान है उनके लिए आगे की झंझट नहीं रही इसलिए हमारा तो भूतकाल चला गया है।

ज़रूरत पड़ी व्यवस्थित की इस काल में ही

अनादि जन्मों से यही ढूँढ रहा था कि यह जगत् किस आधार पर चल रहा है ? उस आधार को खोजकर मैंने आपको दे दिया।

इसलिए अब आपको भविष्य की चिंता नहीं होती। इसीलिए इसे मोक्षमार्ग कहा है न ! वर्ना मोक्षमार्ग नहीं चल सकता। यदि ज़रा सी भी चिंता हो न, तो मेरा दिया हुआ यह ज्ञान चला जाएगा। अतः एक भी चिंता नहीं हो, ऐसा है यह ज्ञान। खोज है यह तो!

एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा कि, 'तीर्थकरों ने क्यों नहीं लिखा?' मैंने कहा, 'उस काल के अनुसार उन्हें जरूरत नहीं थी उस समय। फिर भी उनके हृदय में तो यह ज्ञान था ही लेकिन जरूरत नहीं थी इसलिए बाहर नहीं आया।' तब किसी ने पूछा नहीं और उन्होंने जवाब दिया नहीं। अभी इस काल में जरूरत है, तब यह ज्ञान बाहर आया है। इस काल में उत्पन्न हुआ है यह, क्योंकि इतना घोर अज्ञान उत्पन्न हुआ है कि यह ज्ञान, 'व्यवस्थित कर्ता है', यह अनावृत, खुल्ला नहीं होता तो लोग मुश्किल में फँस जाते। ज्ञान तीर्थकरों का ही है, मेरा कुछ है नहीं। इसलिए आप मन में कोई शंका रखना ही मत।

लोगों के मन में ऐसा लगता है कि ये तो खुद का ज्ञान बता रहे हैं। ज्ञान खुद का कैसे हो सकता है? ज्ञान तो जो अनादि से चला आया है न, वही है! यह ऋषभदेव भगवान का नहीं है, क्योंकि ऋषभदेव भगवान भी कहते थे कि यह तो आगे से चला आया है! अजीतनाथ भगवान भी कहते थे कि यह तो ऋषभदेव भगवान से चला आया है! वही चल रहा है! मैं इसे महावीर भगवान का ज्ञान कहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : भविष्य में ज्ञानियों को व्यवस्थित का ज्ञान हो पाएगा क्या?

दादाश्री : हाँ, होगा न! और यह व्यवस्थित हमारी खोज है, अपूर्व खोज है यह! पहले कभी भी ऐसी खोज नहीं हुई है।

चिंता रहित दशा, अक्रम ज्ञान द्वारा

भविष्य काल की चिंता बंद हो गई। और इस काल में ऐसा कोई ज्ञान नहीं था जो भविष्य काल की चिंता बंद कर सकता। सिर्फ यही एक, यह हमारी व्यवस्थित की खोज है। व्यवस्थित

शक्ति इससे पहले कहीं नहीं आई है न! किसी भी जगह पर व्यवस्थित शब्द सुना ही नहीं है न! सुना होता तो भविष्य काल की चिंता नहीं होती। यह तो भविष्य काल की सारी चिंताएँ सौंपकर सो जाता है चैन से। और अगले दिन फिट भी हो जाता है, नहीं? आपकी वकालत, देखो चल रही है न!

प्रश्नकर्ता : यह मुझे अच्छे से समझ में आ गया, अब संकल्प-विकल्प नहीं होते।

दादाश्री : हाँ, वर्ना कोई व्यक्ति चिंता रहित रह नहीं पाता। क्योंकि क्रमिक मार्ग में अंतिम अवतार में चिंता रहित होते हैं। अहंकार चला जाता है तब चिंता चली जाती है। यह एक आश्चर्य लोगों ने चखा है न!

अपने ज्ञान का हर एक अंश चिंता बंद करता है। एक तो, यदि व्यवस्थित को समझ गया तो चिंता बंद हो गई।

यानी कि जो भी होता है उसे ऐसा समझता है कि वह व्यवस्थित है। अतः हर प्रकार से अपना ज्ञान, हर एक चीज़ में चिंता रहित बनाता है। क्योंकि अहंकार चला गया है इसलिए। चिंता करने वाला जो अहम् है न, वह चला गया इसलिए फिर उसकी सारी वंशावली उसके पीछे चली गई, विलाप करने वाली! विलाप, विलाप, रात-दिन विलाप करवाती रहती हैं, वह सारी वंशावाली उसके साथ चली गई, सभी। और एक्जेक्ट व्यवस्थित दे दिया है! भविष्य काल की याद आए तब भी, किस पर राग है या द्वेष है, वह भी हमें पता चलता है। यदि इस पर से खोज करेंगे तो पता चलेगा हमें!

'व्यवस्थित' का ज्ञान, वहाँ चिंता पलायन

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित' यदि ठीक से

समझ में आ जाए, तो चिंता या टेन्शन कुछ भी नहीं रहेगा?

दादाश्री : ज़रा सा भी नहीं रहेगा। 'व्यवस्थित' यानी साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स। 'व्यवस्थित' तब तक समझते जाना है कि अंतिम 'व्यवस्थित' 'केवलज्ञान' उत्पन्न करेगा। व्यवस्थित समझ में आ जाएगा तो केवलज्ञान समझ में आ जाएगा। यह मेरी 'व्यवस्थित' की खोज इतनी सुंदर है, यह ग़ज़ब की खोज है!

अनंत जन्मों से संसार कौन खड़ा कर रहा था? कर्ता बन बैठे थे, उसकी चिंता!

प्रश्नकर्ता : इस 'ज्ञान' से अब मुझे भविष्य की चिंता नहीं रहती है।

दादाश्री : आप तो ऐसा कह देते हो न, कि 'यह व्यवस्थित है'! 'व्यवस्थित' आपकी समझ में आ गया है न! कोई परिवर्तन होने वाला नहीं है। सारी रात जागकर दो साल बाद का सोचोगे न, तो वे विचार यूज़लेस हैं। 'वेस्ट ऑफ टाइम एन्ड एनर्जी' (समय और शक्ति की बर्बादी) है।

प्रश्नकर्ता : आपने जो 'रियल' और 'रिलेटिव' समझाया, उसके बाद चिंता गई।

दादाश्री : बाद में तो चिंता होती ही नहीं न! इस ज्ञान के बाद चिंता हो, ऐसा है ही नहीं। यह मार्ग संपूर्ण वीतराग मार्ग है। संपूर्ण वीतराग मार्ग यानी क्या, कि 'चिंता ही न हो'। यह तमाम आत्मज्ञानियों का, चौबीस तीर्थंकरों का मार्ग है, यह और किसी का मार्ग नहीं है।

अगले जन्म में यह 'ज्ञान' रहेगा?

प्रश्नकर्ता : यह जो ज्ञान लिया है वह फिर से अगले जन्म में भी रहेगा?

दादाश्री : रहेगा। कोई ज्ञान चला नहीं जाता।

यह ज्ञान भी नहीं चला जाएगा और अन्य कोई ज्ञान ले आओगे तो वह भी नहीं जाएगा। ज्ञान सब जगह रहेगा ही, जहाँ जाओगे वहाँ।

प्रश्नकर्ता : अभी एक या दो जन्म बाकी बचे हैं, उनमें यह आत्मा का ज्ञान रहेगा?

दादाश्री : बाकी सारा ज्ञान तो अभी भूल गए हो न, वह साथ में नहीं आएगा। जिस ज्ञान में हो वही ज्ञान साथ में आएगा। जिस स्टैन्डर्ड में हो, उसी स्टैन्डर्ड से आपका वहाँ शुरू हो जाएगा। अतः यही सब रहेगा। आज यहाँ हैं और कल जो होंगे, उसमें फर्क नहीं है ज़रा भी। इतना ही है कि सिर्फ यह शरीर बदलेगा, अन्य स्थिति वैसी की वैसी ही। और अगर अभी (वहाँ) चोर, बदमाश होगा तो उसे भी यहाँ पर अभी जैसा है, तो वहाँ वैसे का वैसा ही रहेगा! अतः वहाँ पर कोई कुछ ले नहीं लेगा। यह ज्ञान हाज़िर रहेगा, तभी तो मोक्ष में जा पाओगे न! वर्ना मोक्ष में कैसे जा पाओगे?

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी आप जो समकित देते हैं, ज्ञान देते हैं, तो यह पूर्ण मोक्ष जाने तक कायम रहेगा न?

दादाश्री : यह, मोक्ष हो ही गया है, अब अन्य कोई (मोक्ष) लेने को रहा ही कहाँ? पहले अज्ञान से मुक्ति होती है। उसके बाद जब कर्म खत्म हो जाते हैं, तब दूसरी मुक्ति।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगले जन्म में ज्ञान लेना पड़ेगा न?

दादाश्री : नहीं, यह ज्ञान तो साथ में ही रहेगा। यह ज्ञान जो प्राप्त हुआ है न, वही ज्ञान साथ में आएगा।

आर्तध्यान और रौद्रध्यान जो बंद हुए हैं

वही परिणाम आपको तीर्थकर के पास बैठा देगा। स्वभाव बदलने के बाद में यहाँ किसके साथ में रहने देंगे? माँ-बाप कहाँ से लाओगे? जब तीर्थकरों का जन्म होता है तब वे राजा के घर में जन्म लेते हैं, अच्छे घर में। लेकिन दोस्त वगैरह तो आसपास के पटेल-बनिया वगैरह होते हैं, वही दोस्त होंगे न? नहीं। पहले ही वे देवता आ चुके होते हैं। देवता मनुष्य रूप में आकर उनके साथ खेलते हैं। वर्ना गलत संस्कार पड़ जाएँगे। यानी कि सब संयोगों के अनुसार मिल जाता है। आपकी तैयारी होगी तो सब संयोग तैयार ही हैं। आप टेढ़े तो सभी टेढ़े। आप सीधे हो जाओगे तो दूषमकाल बाधक नहीं रहेगा। आपको ज्ञानी पुरुष मिले हैं, ऐसा ज्ञान मिला है। फिर चाहे ऐसे सात दूषमकाल हों, तब भी आपको क्या हर्ज है? आप अपने ज्ञान में हो। आर्तध्यान और रौद्रध्यान नहीं होते। किसी का खराब हो, ऐसा भाव उत्पन्न नहीं होता कभी भी।

अतः धर्मध्यान के फलस्वरूप एक जन्म और होगा वापस। किसी के दो होंगे, किसी का एक होगा और किसी का यह ज्ञान मिलने से कुछ लंबा भी हो जाए लेकिन मुक्ति है, ऐसा तय है। क्योंकि कर्म बंधन रुक गया है।

प्रश्नकर्ता : बीच में, कुछ जन्मों के बाद यदि छुटकारा होना ही है तो फिर बाद के जन्मों में भी यह स्थिति चलती रहेगी न?

दादाश्री : स्थिति तो, यहाँ पर निन्यानवे तक पहुँचे होंगे तो निन्यानवे से फिर से आपका शुरू हो जाएगा। इन भाई का इक्यासी तक होगा तो इक्यासी से शुरू होगा।

प्रश्नकर्ता : यानी कि अगले जन्म में भी कर्म बंधन न हो, वैसी स्थिति जारी ही रहेगी।

दादाश्री : वही स्थिति जारी रहेगी। जो ज्ञान आप लेकर आए हो न, वह तो यहाँ पर अंतिम स्थिति के समय, मृत्यु के समय भी हाज़िर रहेगा और फिर अगले जन्म में वहाँ पर भी हाज़िर रहेगा।

प्रश्नकर्ता : अब अगला जन्म होगा, उस समय क्या हमें यह ज्ञान याद आ जाएगा?

दादाश्री : उसके लिए तो सारे निमित्त मिल जाएँगे। निमित्त के बिना तो नहीं हो सकता। निमित्त मिल जाएँगे, लेकिन वह सिर्फ ज्ञान का निमित्त नहीं, वह तो कोई उल्टा निमित्त भी मिल सकता है। उल्टा निमित्त मिलेगा तो ज्ञान हाज़िर हो जाएगा। कोई उल्टा करने वाला, परेशान करने वाला मिल जाएगा, तो आप सोचने लगोगे, सोचते हुए ज्ञान की लाइट हो जाएगी। या फिर कोई साधु-महाराज के पास बातें सुनने गए तो वहाँ पर जब महाराज बात कर रहे होंगे तब मन में ऐसा विचार आएगा कि ऐसा नहीं हो सकता, ऐसा है। तब वह ज्ञान हाज़िर हो जाएगा और लाइट हो जाएगी। अर्थात् निमित्त के मिलने से वापस हाज़िर हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : ये जो बाकी के एक-दो जन्म बचे हैं, उनमें यह जागृति और यह मार्गदर्शन...

दादाश्री : वह सब तो साथ में रहेगा। यह जागृति, यह ज्ञान सबकुछ यहाँ से जैसा छूटेगा, वैसा ही वहाँ पर हाज़िर हो जाएगा। बचपन से ही ऐसा कुछ होगा कि लोगों को आश्चर्य होगा। इसीलिए कृपालुदेव इतनी कम उम्र में भी लिख पाए थे न, सब। यदि ज्ञान हाज़िर नहीं हो पाता हो तो इतनी उम्र में नहीं कर पाते।

प्रश्नकर्ता : अभी इस जन्म में अक्रम मिला है और बाद के जन्मों में भी क्रमिक में जाना पड़ेगा या अक्रम ही रहेगा?

दादाश्री : फिर रहा ही नहीं न! आत्मा प्राप्त हो गया तो हो गया, खत्म! फिर चाहे कुछ भी हो, सब *निकाली* है। अक्रम मिले या क्रमिक मिले, उससे हमें लेना-देना नहीं है। अपना यह ज्ञान हाज़िर ही रहेगा, अंतिम एक-दो जन्मों तक।

प्रश्नकर्ता : तो अगले जन्म में भी अभी की फाइलें वापस साथ में आएँगी?

दादाश्री : यदि फाइलों से फिर कलह की होगी तो साथ में आएँगी और अगर नहीं की होंगी तो नहीं आएँगी। खुद कहाँ बरतता है? यानी जिस समय जो 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' बोलता है तब वह उसमें ही। जिस समय जो फाइल चल रही है उसमें ही, वर्तमान में ही रहना है। भूतकाल याद करने गए कि भीतर *उपाधि* (परेशानी)। उतना टाइम व्यर्थ जाता है और समभाव से फाइलों का *निकाल* नहीं हो पाता और फिर समभाव से। उस वर्तमान में ही रहना है। भूतकाल गॉन।

प्रश्नकर्ता : दादा, इस जन्म में तो आपका ज्ञान मिला है और आज्ञाएँ भी मिली हैं तो अब अगले जन्म में कोई ये आज्ञाएँ देगा या हम यहाँ से लेकर ही जाएँगे या फिर क्या होगा?

दादाश्री : ये आज्ञाएँ इस जन्म के लिए ही हैं। फिर इससे आगे तो आज्ञा आपके जीवन में उतर चुकी होंगी, आपको पालन नहीं करना पड़ेगा। इस जन्म तक ही आपको पालन करना होगा। अच्छी तरह पालन करोगे तो अगले जन्म में आपके अंदर ही उतर चुकी होंगी। आपका वह जीवन आज्ञापूर्वक ही होगा!

वर्तमान में बरतता है अपार सुख

आज्ञा भूल जाए तभी से दुःखदायी। आज्ञा में रहे तभी से सुखदायी! आप 'हमारी' 'पाँच

आज्ञा' में रहो, वही पुरुषार्थ है, वही धर्म है! अन्य कोई पुरुषार्थ नहीं है। उसमें सबकुछ आ जाता है। आपको यह तय करना है कि आज्ञा में रहना है। फिर आज्ञा में रखना वह कुदरत का काम है।

अपना ज्ञान वर्तमानकाली ज्ञान है। इसलिए इसे हर कीमत पर सँभालकर रखना। सँभालने का आपका निश्चय होना चाहिए। अन्य कुछ नहीं। अपने आप ही सँभल जाएगा। आपका निश्चय है, वह निश्चय डिगना नहीं चाहिए। अब, पूर्ण ही कर लेना है। आपको आराम से वर्तमान में रहना है। नो वरीज़।

शक्तियाँ तो अंदर भरी पड़ी हैं। वह कहता है कि मुझ से नहीं हो पाएगा, तो वैसा हो जाता है। इस नेगेटिव ने तो मार दिया है लोगों को। नेगेटिव के प्रति झुकाव की वजह से ही मर गए हैं लोग। वर्तमान में कौन रह सकता है? 'यस' (हाँ) कहने वाला।

आज के दिन तक की ही झंझट करो, वर्तमानकाल तक की ही। भूतकाल तो बीत गया। जो आपका भूतकाल है, उसे क्यों याद करते हो? नहीं याद करते न, यानी भूतकाल बीत गया। उसे तो कोई मूर्ख भी नहीं याद करता। भविष्य काल व्यवस्थित के हाथ में है, तो फिर आपको वर्तमान में रहना चाहिए। अभी चाय पी रहे हो न, तो आराम से चाय पीना, क्योंकि भविष्य काल व्यवस्थित के हाथ में है। आपको कैसी झंझट? यानी वर्तमान में रहो। खाना खाते हैं, उस समय तो खाने में पूर्ण चित्त रखकर खाना चाहिए। पकोड़े किसके बने हैं, यह सब आराम से जानना चाहिए।

'वर्तमान में रहना', इसका अर्थ क्या कि बहीखाता लिखो तो बिल्कुल एक्ज्युरेट (जागृति), उसी में चित्त रखना चाहिए। क्योंकि यदि चित्त भविष्य काल में जाएगा तो उससे आज का

बहीखाता बिगड़ जाएगा। क्योंकि भविष्य के विचार किच-किच करते हैं, जिससे आज का बहीखाता बिगड़ जाता है, भूलचूक हो जाती है। लेकिन जो वर्तमान में रहता है, उसकी एक भी भूल नहीं होती है, उसे चिंता नहीं होती है। भगवान भूतकाल और भविष्य काल का बहीखाता नहीं रखते। एक सेकन्ड बाद का बहीखाता समुद्र में डाल देना चाहिए। जो वर्तमान में ही रहते हैं, वे भगवान!

इस वर्तमान में हमें सुख है, जो बेहिसाब सुख है, अब भविष्य काल के विचार करने से यह सुख बिगड़ जाता है। यानी कि इस सुख को भी भोग नहीं पाते और भविष्य भी बिगड़ता है। इसलिए हम कहते हैं कि भविष्य काल का सब व्यवस्थित के ताबे में चला गया। अब, जो चीज़ अपने ताबे में नहीं है, उसकी झंझट करके क्या करना है? कुछ चीज़ें मेरे बस में होती हैं उसके

लिए आप कह देना कि दादा के बस में है, मैं क्यों झंझट करूँ? इस प्रकार जो 'व्यवस्थित' के ताबे में है उसके लिए आपको झंझट करने की ज़रूरत क्या है? आप सब को अनुभव हो गया है न? एक्झेक्ट (एकदम सही) व्यवस्थित है। अब घड़ी भर बाद क्या होगा, वह व्यवस्थित के ताबे में है। इसलिए आगे की यह चिंता छोड़ दो।

अब भूतकाल तो रहा ही नहीं है न! भूतकाल आपको याद नहीं रहता है, वह तो बहुत ही बड़ी चीज़ है! ये सब (महात्मा) ज्ञान में हैं, इसलिए वर्तमान में रहते हैं। भविष्य काल में खो नहीं जाते। भूतकाल के लिए झंझट नहीं करते, वर्तमान में ही रहते हैं। आपको वर्तमान में रहना चाहिए। जहाँ कहीं भी जाओ वहाँ वर्तमान में रहना चाहिए। भूतकाल का भय छूट गया, भविष्य 'व्यवस्थित' के हाथ में है, इसलिए वर्तमान में रहो।

जय सच्चिदानंद

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- ✦ 'साधना' पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दीमें)
- ✦ 'आस्था' पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन सह्याद्रि' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन सह्याद्रि' पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और शनि-रवि दोपहर 11-30 से 12
- ✦ 'आस्था कन्नड़ा' पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ामें)
- ✦ 'दूरदर्शन चंदना' पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ामें)
- ✦ 'धर्म संदेश' पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)
- ✦ 'दूरदर्शन गिरनार' पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- ✦ 'वालम' पर हर रोज़ शाम 6 से 7 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, मुंबई : 9323528901, अंजार : 9924346622, मोरबी : 9924341188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557, गोधरा : 9723707738, जामनगर : 9924343687, भावनगर : 9313882288, अहमदाबाद (दादा दर्शन) : 9574001445, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820 यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, यु.के.: +44 330-111-3232, ऑस्ट्रेलिया: +61 402179706

मुख्य ज़रूरत, मोक्षमार्ग में

मोक्षमार्ग में दो चीजें नहीं होती। स्त्री के विचार और लक्ष्मी के विचार! जहाँ स्त्री का विचार मात्र हो, वहाँ धर्म नहीं होता, लक्ष्मी का विचार मात्र हो वहाँ धर्म नहीं होता। इन दो मायाओं के कारण तो यह संसार खड़ा रहा है। हाँ, इसलिए वहाँ धर्म ढूँढना भूल है। जबकि अभी लक्ष्मी के बिना कितने केन्द्र चलते हैं?

प्रश्नकर्ता : एक भी नहीं।

दादाश्री : वह माया छूटती नहीं न! गुरु में भी माया प्रवेश कर गई होती है। कलियुग है न! इसलिए प्रवेश कर जाती है न, काफी कुछ? इसलिए जहाँ पर स्त्री संबंधी विचार हैं, जहाँ पैसे संबंधी लेन-देन है, वहाँ सच्चा धर्म नहीं हो सकता। संसारियों के लिए नहीं, परंतु जो उपदेशक होते हैं, जिनके उपदेश के आधार पर चलते हैं, वहाँ यह नहीं होना चाहिए। नहीं तो इन संसारियों के वहाँ भी यही है और आपके वहाँ भी यही है? ऐसा नहीं होना चाहिए। और तीसरा क्या? सम्यक् दृष्टि होनी चाहिए।

इसलिए लक्ष्मी और स्त्री संबंध हों, वहाँ पर खड़े मत रहना। गुरु देखकर बनाना। लीकेज वाला हो तो मत बनाना। बिल्कुल भी लीकेज नहीं चाहिए। गाड़ी में घूमता हो तो हर्ज नहीं, परंतु चारित्र में फेल हो तो हर्ज है। बाकी यह अहंकार हो उसका हर्ज नहीं है, कि 'महाराज जी, महाराज जी' करें तो खुश हो जाता है, उसमें हर्ज नहीं है। चारित्र से फेल नहीं हो तो लेट गो करना चाहिए। सब से मुख्य वस्तु चारित्र है!

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी और स्त्री वह सच्ची धार्मिकता के विरुद्ध है! परंतु स्त्रियाँ तो अधिक धार्मिक होती हैं, ऐसा कहा जाता है।

दादाश्री : स्त्रियों में धार्मिकता होती है, उसमें शंका नहीं है, धर्म में स्त्रियाँ हों तो हर्ज नहीं है, परंतु कुदृष्टि का हर्ज है, कुविचार का हर्ज है। स्त्री को भोग का स्थान मानते हो, उसमें हर्ज है, वह आत्मा है, वह भोग का स्थान नहीं है।

बाकी, जहाँ लक्ष्मी ली जाती है, फ़ीस के रूप में लक्ष्मी ली जाती है, कर के रूप में लक्ष्मी ली जाती है, भेंट के रूप में ली जाती है, वहाँ धर्म नहीं होता। पैसे हों, वहाँ धर्म नहीं होता और धर्म हो वहाँ पैसा नहीं होता। यानी कि समझ में आए वैसी बात है न? जहाँ विषय और पैसे हों, वहाँ वह गुरु भी नहीं है। गुरु भी अब अच्छे तैयार होंगे। अब सब कुछ बदलेगा। अच्छा यानी पवित्र। हाँ, गुरु को पैसों की अड़चन हो, तो हम पूछें कि आपको खुद के निर्वाह के लिए क्या ज़रूरत है? बाकी दूसरा कुछ उन्हें नहीं होना चाहिए। या फिर 'बड़ा होना है, फलाँ होना है', ऐसा नहीं होना चाहिए।

ये क्या सुखी लोग हैं? मूलतः दुःखी हैं लोग और उनके पास से रुपये लेते हो? दुःख निकालने के लिए वे गुरु के पास जाते हैं न? तब आप उसके पच्चीस रुपये लेकर उसका दुःख बढ़ा देते हो! एक पैसा भी नहीं लेना चाहिए किसी के पास से। एक रुपया भी नहीं लेना चाहिए। दूसरों के पास से कुछ भी लेना, वह जुदाई कहलाती है। उसी का नाम संसार है! उसमें वही भटका हुआ है, जो लेने वाला मनुष्य है वह भटका हुआ कहलाता है। सामने वाले को पराया समझता है, इसलिए वह पैसे लेता है।

इस दुनिया की कोई भी चीज़, एक रुपया भी यदि मैं खर्च करूँ तो मैं उतना दिवालिया होता जाऊँगा। भक्तों का एक भी पैसा खर्च नहीं कर सकते। यह व्यापार जिसने शुरू किया है वह खुद

दिवालिया की स्थिति में चला जाएगा, यानी जो कुछ भी उन्हें सिद्धि प्राप्त है, वह खोकर चले जाएँगे। जो थोड़ी-बहुत सिद्धि प्राप्त हुई, उसके आधार पर सब लोग उनके पास आते थे। परंतु फिर सिद्धि खत्म हो जाएगी! किसी भी सिद्धि का दुरुपयोग करो तो सिद्धि खत्म हो जाती है।

कितने ही लोग यहाँ आकर पैसे रखते हैं। अरे, यहाँ पैसे नहीं रखने होते, यहाँ माँगना होता है। यहाँ तो रखने का होता होगा? जहाँ ब्रह्मांड का मालिक बैठा हुआ है, वहाँ तो कुछ रखा जाता होगा? आपको तो सिर्फ माँगना होता है कि 'मुझे ऐसी अड़चन है, वह निकाल दीजिए।' वरना, पैसे तो किसी गुरु के सामने रखना। उन्हें कुछ कपड़े चाहिए होंगे, दूसरा कुछ चाहिए होगा। ज्ञानी पुरुष को तो कुछ भी नहीं चाहिए।

एक मिल के सेठ ने, सांताक्रुज़ में हम जहाँ रहते थे वहाँ, इतनी बड़ी-बड़ी तीन पेटियाँ मज़दूर के साथ ऊपर भिजवाईं। फिर सेठ ऊपर मिलने आया। मैंने कहा, 'क्या है यह सब सेठ?' तब सेठ कहते हैं, 'कुछ नहीं, फूल नहीं पर फूल की पंखुड़ी...' मैंने कहा, 'किसलिए यह पंखुड़ी लाए हो?' तब उन्होंने कहा, 'कुछ नहीं, कुछ नहीं साहब।' मैंने कहा, 'आपको कुछ दुःख या अड़चन है?' तब वे बोले, 'सेर मिट्टी चाहिए।' 'अरे, सेर मिट्टी कौन-से जन्म में नहीं थी? कुत्ते में गया वहाँ भी बच्चे थे, गधे में गया वहाँ भी बच्चे थे, बंदर में गया वहाँ भी बच्चे, जहाँ गया वहाँ बच्चे। अरे, कौन-से जन्म में नहीं थी यह मिट्टी? अभी भी सेर मिट्टी चाहिए? भगवान आप पर राजी हुए हैं, तब फिर आप मिट्टी ढूँढ रहे हो? फिर मुझे रिश्वत देने आए हो? यह आपकी गंदगी मुझे चुपड़ने आए हो? मैं व्यापारी आदमी! फिर मेरे पास गंदगी आए तो मैं किसे चुपड़ने जाऊँ? ये बाहर सभी गुरुओं को चुपड़ आओ। उन बेचारों के पास गंदगी नहीं आती। यह झगड़ा यहाँ कहाँ लाए?' तब उन्होंने कहा, 'साहब, कृपा कीजिए।' तब मैंने कहा, 'हाँ, कृपा करेंगे, सिफारिश कर दूँगा।'

आपको जो दुःख है, तब हमें तो 'इस तरफ का' 'फोन' पकड़ा और 'इस तरफ'(देवी-देवताओं को) 'फोन' किया! हमें बीच में कुछ भी नहीं है। मात्र एक्सचेन्ज करना है। नहीं तो हमें ज्ञानी पुरुष को यह सब होता ही नहीं न! ज्ञानी पुरुष इसमें कुछ हाथ नहीं डालते। लेकिन इन सबके दुःख सुनने पड़े हैं न! ये सारे दुःख मिटाने पड़े होंगे न? अड़चन हो तो रुपये माँगने आना। अब, मैं तो रुपये देता नहीं, मैं फोन कर दूँगा, आगे! परंतु लोभ मत करना। तुझे परेशानी हो, तभी आना। तेरी परेशानी दूर करने जितना सभी कर दूँगा। परंतु लोभ करने जाएगा, उस घड़ी मैं बंद कर दूँगा।

आपके दुःख मुझे सौंप दो और यदि आपको विश्वास हो तो वे आपके पास नहीं आएँगे। मुझे सौंपने के बाद आपका विश्वास टूटेगा तो आपके पास वापस आएँगे। इसलिए आपको कुछ दुःख हों, तो मुझे कहना कि, 'दादा, मुझे इतने दुःख हैं, वे मैं आपको सौंप देता हूँ।' वे मैं ले लूँ तो निबेड़ा आए, नहीं तो निबेड़ा कैसे आएगा?

मैं इस दुनिया के दुःख लेने आया हूँ। आपके सुख आपके पास ही रहने दो। उसमें आपको हर्ज है क्या? आपके जैसे यहाँ पर पैसे दें, तो मुझे पैसों का क्या करना है? मैं तो दुःख लेने आया हूँ। आपके पैसे आपके पास ही रहने दो, वे आपके काम आएँगे और जहाँ ज्ञानी हों, वहाँ पैसों का लेन-देन नहीं होता। ज्ञानी तो बल्कि आपके सभी दुःख निकालने के लिए आए होते हैं, दुःख खड़े करने के लिए नहीं आए होते हैं।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

हरियाणा-उत्तर प्रदेश-राजस्थान

गुरुग्राम	दिनांक : 21 जून	संपर्क : 8130952631
फरीदाबाद	दिनांक : 25 जून	संपर्क : 9501009538
सोनीपत	दिनांक : 26 जून	संपर्क : 9416509949
पानीपत	दिनांक : 26 जून	संपर्क : 9896694590
करनाल	दिनांक : 27 जून	संपर्क : 9996437267
कुरुक्षेत्र	दिनांक : 27 जून	संपर्क : 9671868450
अम्बाला	दिनांक : 28 जून	संपर्क : 8168998690
हिसार	दिनांक : 29 जून	संपर्क : 9896871690
गाजियाबाद	दिनांक : 24 जून	संपर्क : 9968738972
जयपुर	दिनांक : 20 जुलाई	संपर्क : 9460611890
बीकानेर	दिनांक : 22 जुलाई	संपर्क : 7597510727
जैतारण	दिनांक : 24 जुलाई	संपर्क : 9413172239
बाड़मेर	दिनांक : 27-28 जुलाई	संपर्क : 9408424945

महाराष्ट्र

जलगाँव	दिनांक : 29 जून	संपर्क : 9420942944
औरंगाबाद	दिनांक : 30 जून	संपर्क : 9511795198
नाशिक	दिनांक : 1 जुलाई	संपर्क : 9028939681
अहमदनगर	दिनांक : 2 जुलाई	संपर्क : 9422225475
सातारा	दिनांक : 3 जुलाई	संपर्क : 7350998503
कोल्हापुर	दिनांक : 5-6 जुलाई	संपर्क : 7499898426
सांगली	दिनांक : 7 जुलाई	संपर्क : 9423870798
सोलापुर	दिनांक : 8 जुलाई	संपर्क : 9284188494

पश्चिम बंगाल-बिहार-उड़ीसा-छत्तीसगढ़

कोलकाता	दिनांक : 5 से 7 जुलाई	संपर्क : 9830080820
भुवनेश्वर	दिनांक : 8 जुलाई	संपर्क : 7077902158
ब्रह्मपुर	दिनांक : 9 जुलाई	संपर्क : 7077902158
कटक	दिनांक : 10 जुलाई	संपर्क : 8480800788
बरगड्	दिनांक : 11-12 जुलाई	संपर्क : 9650500065
रायपुर	दिनांक : 13 जुलाई	संपर्क : 9179025061
भिलाई	दिनांक : 14 जुलाई	संपर्क : 9407982704

समय और स्थल की जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में अडालज में सत्संग कार्यक्रम

- 10 अगस्त (शनि) - सत्संग और 11 अगस्त (रवि) - ज्ञानविधि
 26 अगस्त (सोम) - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम
 31 अगस्त से 7 सितम्बर (शनि से शनि) - आप्तवाणी 14 भाग-3 पर सत्संग पारायण
 8 सितम्बर (रवि) - पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम (गुरुपूर्णिमा के दर्शन)

विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

सेन्टर	समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
अजमेर	(19 जुलाई) सुबह 10 से 6	श्री राम धर्मशाला, जवाहर रंग मंच के पीछे.	9460611890
अमरावती	(21 जुलाई) सुबह 10-30 से 5-30	रूद्रेश मंगलम्, नंदा मोटर्स के सामने, नवाथे चौक के पास, बड़नेरा रोड़.	7775810410
अंजड़	(21 जुलाई) सुबह 9 से 12	दादा भगवन सत्संग सेंटर, बड़दा-बसावट, भैरव मंदिर के पीछे.	9617153253
आसनसोल	(21 जुलाई) सुबह 10 से 5	नंदी नियर बोरतोला हरिमंदिर, जमुरिया नंदी रोड़.	7679186469
औरंगाबाद	(21 जुलाई) शाम 5-30 से 9	निमिषा बैंगला, पेंडकर हॉस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक, सेंट्रल बस स्टैंड रोड़.	9423392849
बक्सा	(21 जुलाई) दोपहर 12 से 3-30	ग्राम-चंतपारा, थमना, जिला-बक्सा.	8011249648
बेंगलुरु	(21 जुलाई) सुबह 10-30 से 4	महाराष्ट्र मंडल, दूसरा क्रॉस, गांधी नगर .	9590979099
बाड़मेर	(21 जुलाई) दोपहर 1-30 से 4-30	दिगंबर जैन मंदिर, मॉल गोदाम रोड़.	9314209457
भिलाई	(21 जुलाई) सुबह 10 से 1-30	दादा दर्शन, मैत्री गार्डन चोक, पानी की टंकी के पास, मरोड़ा.	9407982704
भोपाल	(21 जुलाई) सुबह 11 से 3	SAGE यूनिवर्सिटी केम्पस, सहारा बायपास रोड़.	9826926444
चंडीगढ़	(21 जुलाई) शाम 4 से 7-30	गढ़वाल भवन, साईबाबा मंदिर के पास, सेक्टर 29A, चंडीगढ़.	9780732237
चेन्नई	(21 जुलाई) दोपहर 2 से 5-30	विश्रान्ति अपार्टमेंट, 7-ब्रेथवेट रोड़, वेपेरी.	7200740000
चित्तौड़गढ़	(21 जुलाई) दोपहर 1 से 4-30	आईटेक, आई टी आई, 69-70 बालाजी नगर सेगवा हाउसिंग बोर्ड, सेंथी.	9829749481
कटक	(21 जुलाई) सुबह 9 से 5	स्थल की जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करे.	7077902158
दर्यापुर	(22 जुलाई) शाम 4 से 7-30	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, बनोसा अकोट रोड़.	7218133513
देहरादून	(21 जुलाई) सुबह 11-30 से 4-30	1, अंतरिप विहार, C-12, भारतीय स्टेट बैंक के पास, क्लेमेंट टाउन, टर्नर रोड़.	9012279556
दमोह	(21 जुलाई) दोपहर 1 से 5	आम चोम्प्रा कन्या शाला.	9926985853
धर्मशाला	(20 जुलाई) सुबह 10 से 1-30	टिक्का लेहसर, वेद मंदिर के पास, योल केंट.	9805254559
गाज़ियाबाद	(21 जुलाई) सुबह 10 से 3	हसनदास टावर क्लब हाउस, आदित्य मोल के पास, अहिंसा खंड, इंदिरापुरम.	9557831357
गोंदिया	(21 जुलाई) दोपहर 3 से 7	ग्राम बाजारतोला, पोस्ट काटी.	8308777253
गोरखपुर	(21 जुलाई) दोपहर 12 से 3-30	95 A, बजरंग नगर कोलोनी के सामने, रामनगर रोड़, गोरखनाथ.	9935949099
ग्वालियर	(21 जुलाई) शाम 4 से 7-30	K.S. मेमोरियल हाईस्कूल, गायत्री विहार कॉलोनी, पिंटू पार्क.	9926265406
हिसार	(21 जुलाई) सुबह 10 से 1-30	श्री सनातन धर्म मंदिर, मॉडल टाउन, जिंदल चौक.	9896871690
इन्दौर	(21 जुलाई) सुबह 10 से 4	पी.एम.बी. गुजराती साइंस कॉलेज, नसिया रोड़.	9229289533
जबलपुर	(21 जुलाई) दोपहर 3 से 7	4 th फ्लोर, सिविक सेंटर जलसा हॉल, समदारिया मॉल.	8103322601

दादावाणी

जयपुर	(21 जुलाई) सुबह 10 से 5	पाथेय भवन, पाथेय कण, सेंट एंजलमस स्कूल एवं रूंगटा हॉस्पिटल के सामने वाली गली, कैलगिरी मार्ग, मालवीय नगर.	8890357990
जलंधर	(21 जुलाई) सुबह 8 से 1	C/O ईगल प्रकाशन, सेन्ट्रल मिल कंपाउंड, पुराना रेल्वे रोड़.	9814063043
जलगाँव	(21 जुलाई) शाम 4 से 7-30	झुलेलाल हॉल, R.R. विद्यालय से सामने, गुरुद्वारा के पास.	9420942944
जैतारण	(21 जुलाई) शाम 4 से 8	उदावतो की पोल, लोटोती.	9413172239
जमशेदपुर	(21 जुलाई) सुबह 10-30 से 5	पासपंडित दीनदयाल उपाध्याय सामूहिक विकास भवन, मगदम छठ घाट के पास, बर्मा माइन्स.	9031292567
जोधपुर	(25 जुलाई) दोपहर 3 से 6-30	नागरिक मण्डल भवन, नेहरू पार्क.	9828360301
झाँसी	(21 जुलाई) दोपहर 3 से 6-30	मकान नं-2180, गिलेस्पी हॉल के पास, खाती बाबा रोड़.	9415588788
काशीपुर	(21 जुलाई) सुबह 8 से 11-30	जगदम्बा विहार कॉलोनी, द्रोणसागर रोड, काशीपुर, उधमसिंह नगर.	9457635398
खरगोन	(21 जुलाई) सुबह 10 से 3	दिगांबर जैन धर्मशाला, ऊन.	9753141714
कोल्हापूर	(21 जुलाई) सुबह 10 से 4	महालक्ष्मी हॉल साईक्स एक्स्टेंशन, महागांवकर मार्ग, स्वयंशिध्दा शेजारी, शाहुपुरी.	7499898426
कोलकाता	(21 जुलाई) सुबह 9-30 से 5	श्रीमद् राजचंद्र आत्म तत्व रिसर्च सेंटर, भवानीपोर.	9830080820
लखनऊ	(21 जुलाई) दोपहर 2 से 5-30	नंदना, निकट प्राईमरी स्कूल, बख्शी का तालाब, लखनऊ.	9839265016
लुधियाना	(21 जुलाई) दोपहर 3 से 6-30	170 F - नकिचलू नगर, लुधियाना.	9465051163
मुंबई	(21 जुलाई) दोपहर 3-30 से 8	मुंबई त्रिमंदिर, ऋषिवन, अभिनव नगर रोड, काजुपाड़ा, बोरीवली-ई.	9323528901
मैनपुरी	(21 जुलाई) शाम 4 से 7-30	दादा भगवन सेंटर, रामदेवी कॉलोनी, राधा रमण रोड़.	8392920117
मालदा	(21 जुलाई) सुबह 9 से 5	सुकांता पाली, पो-रतुआ, मालदा.	7908922840
नागपुर	(21 जुलाई) सुबह 9 से 12-30	कच्छी व्हिसा ओसवाल भवन, लकड़गंज.	9325412107
नवादा	(21 जुलाई) दोपहर 12 से 3-30	दुर्गा स्थान के पास, बिजली ऑफिस के सामने, गया रोड़.	9128949491
नाशिक	(21 जुलाई) दोपहर 3 से 7	आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी.	9028939681
नांदेड़	(21 जुलाई) दोपहर 3 से 7	घर नं-16, महावीर सोसाइटी, नारायणी हॉस्पिटल रोड़, शिवाजी नगर.	8806665557
पाली	(23 जुलाई) शाम 4 से 7-30	मेवाड़ा समाज भवन, रजत विहार कॉलोनी, नयागांव रोड़, पाली.	9252065202
पटना	(28 जुलाई) सुबह 9 से 5	महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड़.	9431015601
पोंडा(गोवा)	(21 जुलाई) दोपहर 3 से 6-30	पाटीदार भवन, मारुति मंदिर के पास, दवोर्ली, मडगांव.	8698745655
प्रयागराज	(21 जुलाई) दोपहर 3 से 7	हिन्दुस्तान एकेडमी, सिविल लाइन्स, हनुमान मंदिर के पास.	9935378914
पुणे	(21 जुलाई) सुबह 10 से 8	महावीर प्रतिष्ठान स्कूल, सेलिसबरी पार्क रोड़, गुलटेकड़ी.	9422660497
रायपुर	(21 जुलाई) सुबह 10 से 4	दादा दर्शन, गुजराती लुहार समाज भवन, रिंग रोड 2, गोंदवारा.	9179025061
राजनगर खास (चंबा)	(21 जुलाई) सुबह 10 से 1-30	दादा भगवान सत्संग केन्द्र, राजनगर खास.	9418655529
सतारा	(21 जुलाई) सुबह 11 से 5	929, आदर्श अपार्टमेंट, भावे सुपारी के पास, शनिवार पेठ.	7350998503
सिद्धार्थनगर	(21 जुलाई) शाम 4 से 7-30	ग्राम हरदासपुर खास, पोस्ट शिवपतिनगर, थाना मोहाना.	7376065054
सोलापुर	(21 जुलाई) दोपहर 12 से 6	ऐशानी बंगलो, वसंत विहार निखिल थोबडे नगर, साई सुपर मार्केट के पीछे.	9284188494
उदयपुर	(21 जुलाई) दोपहर 2-30 से 5-30	13 गोकुल विलेज, गिरिजा व्यास पेट्रोल पंप के पास, गीतांजलि हॉस्पिटल लिंक रोड़, तितरणी (सेक्टर 9).	9079965949
उज्जैन	(21 जुलाई) सुबह 9-30 से 1	आचार्य विद्यासागरजी अतिथि भवन, बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने, फ्रीगंज.	9826487407
वाराणसी	(28 जुलाई) सुबह 10 से 2	श्री श्रृंगेरी शंकराचार्य मठ, महमूरगंज.	9794849099

Atmagnani Pujya Deepakbhai's USA - Canada Schedule - 2024

USA & Canada: +1-877-505-DADA (3232) Email - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	From	To	Event	Venue
21-Jun	Fri	5:00 PM	7:30 PM	Satsang	Houston, TX Gujarati Samaj Hall 9550 W Bellfort Ave. Houston, TX 77031
22-Jun	Sat	11:00 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
22-Jun	Sat	5:00 PM	8:00 PM	Gnanvidhi	
25-Jun	Tue	6:30 PM	8:00 PM	Satsang	Tampa, FL Indian Cultural Center 5511 Lynn Rd. Tampa, FL 33624
26-Jun	Wed	11:00 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
26-Jun	Wed	5:00 PM	8:00 PM	Gnanvidhi	
28-Jun	Fri	6:00 PM	7:30 PM	Satsang	Raleigh, NC HSNC Temple - Cultural Hall 309 Aviation Pkwy, Morrisville, NC 27560
29-Jun	Sat	11:00 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
29-Jun	Sat	5:00 PM	8:00 PM	Gnanvidhi	
6-Jul	Sat	5.30 pm	7.00 pm	Satsang	New Jersey DoubleTree by Hilton Somerset 200 Atrium Dr Somerset, NJ 08873
7-Jul	Sun	11:00 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
7-Jul	Sun	5.00 pm	8.00 pm	Gnanvidhi	
8-Jul	Mon	10:00 AM	1:00 PM	Niruma Gnan Day Celebration	
12-Jul	Fri	7:00 PM	9:30 PM	Satsang	Toronto, Canada Renaissance by the Creek 3045 Southcreek Rd Mississauga, ON L4X 2X7
13-Jul	Sat	11:00 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
13-Jul	Sat	5:00 PM	8:00 PM	Gnanvidhi	
17-Jul	Wed	10:00 AM	12:30 PM	Satsang	Chicago, IL Schaumburg Convention Center 1551 Thoreau Dr N Schaumburg, IL 60173
17-Jul	Wed	4:30 PM	7:00 PM	Satsang	
18-Jul	Thu	10:00 AM	12:30 PM	Satsang	
18-Jul	Thu	4:30 PM	7:00 PM	Satsang	
19-Jul	Fri	10:00 AM	12:30 PM	Pran Pratistha	
19-Jul	Fri	4:30 PM	7:00 PM	Satsang	
20-Jul	Sat	10:00 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
20-Jul	Sat	4:30 PM	7:30 PM	Gnanvidhi	
21-Jul	Sun	8:00 AM	9:00 AM	Gurupu. Pujan, Aarti, Message	
21-Jul	Sun	10:00 AM	12:30 PM	Gurupurnima Darshan	
21-Jul	Sun	4:30 PM	7:00 PM	Gurupurnima Darshan	
22-Jul	Mon	10:30 AM	12:00 PM	Satsang	
27-Jul	Sat	5:00 PM	7:30 PM	Satsang	Los Angeles, CA Jain Center of Southern CA 8072 Commonwealth Ave Buena Park, CA 90621
28-Jul	Sun	11:00 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
28-Jul	Sun	4:30 PM	7:30 PM	Gnanvidhi	

अडालज : श्री सीमंधर स्वामी जन्म कल्याणक : ता. 21 अप्रैल 2024



अडालज : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 5 मई 2024



सीमंधर सीटी के महात्माओं के लिए अंबाजी यात्रा : ता. 6 मई 2024



वर्तमान में बरते सदा सो ज्ञानी जगमांही

हम वर्तमान में ही रहते हैं। इसलिए लोग कहते हैं, 'दादा, आप टेन्शन रहित हैं!' मैंने कहा, 'कैसा टेन्शन, भाई!' वर्तमान में रहें तो टेन्शन होता होगा? टेन्शन तो उन्हें होता है जो भूतकाल में खो जाते हैं, भविष्य के लिए पागलपन करें उन्हें होता है, हमें क्या टेन्शन? और मैंने आपको वही पद दिया है। यदि व्यवस्थित पूरा ही समझ में आ जाए, तो फिर कोई टेन्शन ही नहीं है। जो वर्तमान में रहता है, उसे 'ज्ञानी' कहा है भगवान ने! जबकि अज्ञानी भविष्य काल में रहते हैं या फिर भूतकाल में रहते हैं, वर्तमान काल में नहीं रहते कभी भी! यहाँ भोजन करते समय वह न जाने कहाँ गया होता है? आपके तावे में क्या बताया? वर्तमान काल। और वर्तमान में बरते सदा सो ज्ञानी जगमांही! यानी निरंतर वर्तमान में बरतते रहते हैं! यानी मैं वर्तमान में रहता हूँ और आपको वर्तमान में रहना सिखाता हूँ। दिक्कत है इसमें? और फिर नियम से है। भगवान ने क्या कहा है, वर्तमान में रहने को कहा है।

-दादाश्री

